न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।

भारती

वार्षिक पत्रिका

2024

इलाहाबाद इण्टर कालेज

(अग्रवाल जातीय शिक्षा परिषद द्वारा संचालित)

11/19, एस.सी. बसु रोड, जीरो रोड, प्रयागराज

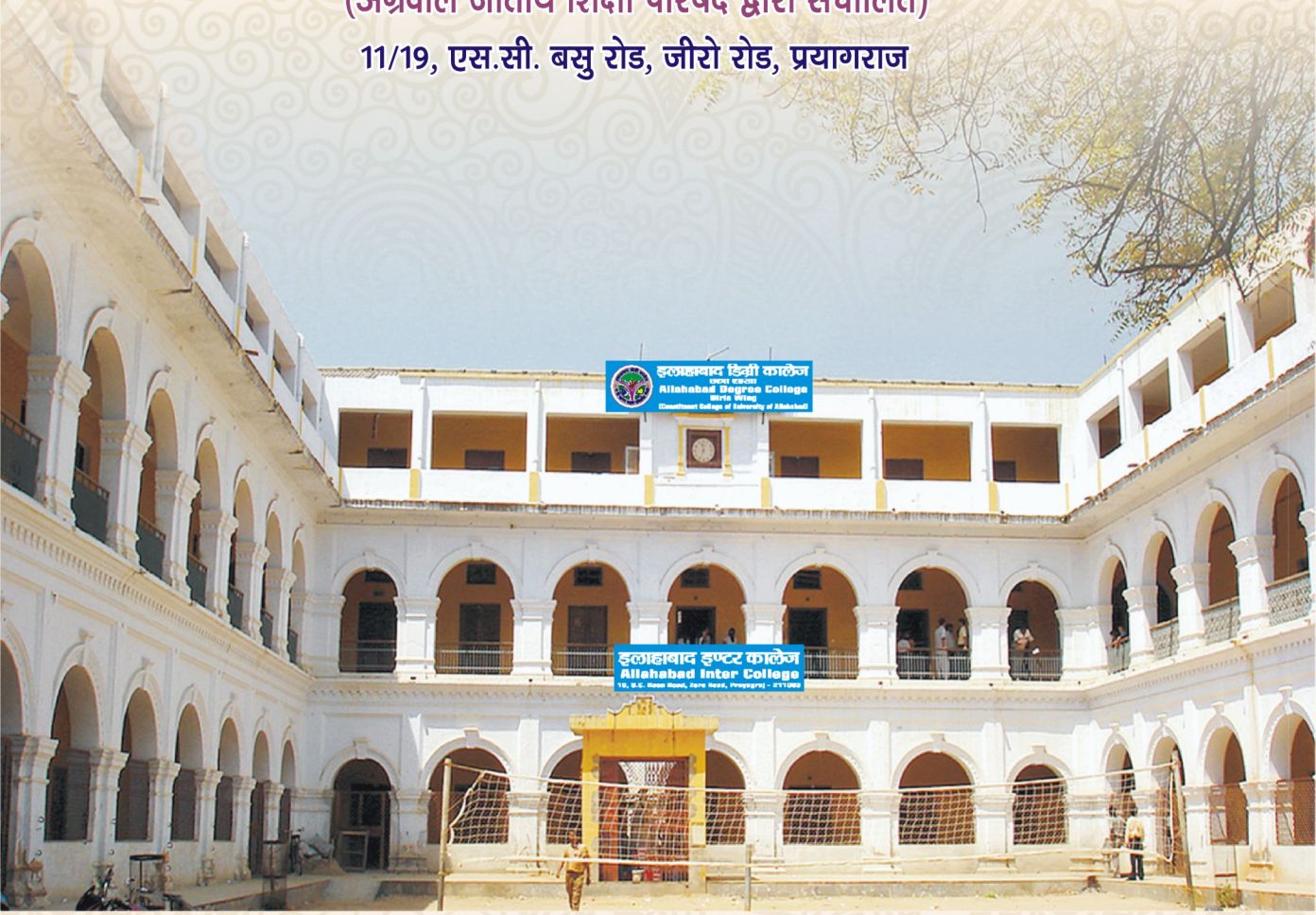

इलाहाबाद इण्टर कालेज, प्रयागराज

प्रबन्ध समिति के सम्मानित पदाधिकारियों एवं सदस्यों के साथ विद्यालय में कार्यरत प्रधानाचार्य, शिक्षक एवं शिक्षिकाएं

इलाहाबाद इण्टर कालेज

प्रयागराज

वार्षिक पत्रिका

भारती

(2024)

संरक्षक

डॉ0 (श्रीमती) मंजू सिंह

प्रधानाचार्य

प्रधान सम्पादक

डॉ0 अनन्त कुमार गुप्त

सम्पादक

डॉ0 (श्रीमती) इन्दु सिंह
डॉ0 जय प्रकाश शर्मा
महेश कुमार श्रीवास्तव
डॉ0 श्रीराम तिवारी
राजेन्द्र प्रताप सिंह
श्रीमती मीनाक्षी शर्मा
अजय बहादुर सिहं
डॉ0 देवी शरण
श्रीमती रशिम अग्रवाल
कुँवर मृगेन्द्र सिंह

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हुआ कि इलाहाबाद इण्टर कालेज, प्रयागराज विगत वर्षो की भाँति इस वर्ष भी अपनी वार्षिक पत्रिका ''भारती'' का प्रकाशन कर रहा है। यह विद्यालय प्रदेश के प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थानो में अपनी प्रभावपूर्ण शिक्षा एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं में विशेष महत्व रखता है। पत्रिका के माध्यम सें छात्र–छात्राओं एवं शिक्षक–शिक्षिकाओं को अपनी साहित्यिक प्रतिभा को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है साथ ही विद्यालय की उपलब्धियों एवं कार्यक्रमों से जन मानस का परिचय सम्भव हो पाता है।

मैं, प्रबन्ध समिति के समस्त पदाधिकारियों एवं सदस्यों की ओर से ''भारती'' के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं एवं विद्यालय परिवार को बधाई देता हूँ।

(श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल)

अध्यक्ष

प्रबन्ध समिति, इलाहाबाद इण्टर कालेज,

प्रयागराज

प्रो0 पीयूष रंजन अग्रवाल
Prof. Peeush Ranjan Agrawal

Formerly :
- Professor (HAG), School of Management Studies
  Motilal Nehru National Institute of Technology Allahabad
  Prayagraj, India
- Vice-Chancellor, V.B.S. Purvanchal University, Jaunpur, U.P.
- Vice-Chancellor, A.P. Singh University, Rewa, M.P.

Address :
21, Kamla Nehru Road,
Near Manmohan Park, Katra,
Prayagraj - 211002, India
peeushra@rediffmail.com
+91-9415218088

दिनांक 16.03.2024

संदेश

प्रयाग की पावन धरती पर जीरोरोड स्थित, विद्यालय की स्थापना सन् 1906 में 'अग्रवाल विद्यालय' के स्वरूप में 03 विद्यार्थियों के साथ जौहरी टोला के बंदर का शिवाला नामक भोलेनाथ के मन्दिर से हुई । तात्कालिक परिस्थिति में, जनसामान्य के पढ़ाई–लिखाई के प्रति उदासीनता को देखते हुए, स्व0 श्री काशीनाथ अग्रवाल प्रवेशित विद्यार्थियों के लिए पुस्तक, कपड़े एवं मध्यान भोजन की जिम्मेदारी का निर्वहन स्वयं करते थे। चार वर्ष उपरान्त, 1910 में 'अग्रवाल विद्यालय इण्टर कालेज' के नाम से वर्तमान परिसर 19, एस0सी0 बसुरोड पर यह विद्यालय पुर्नस्थापित हुआ । वर्ष 1915 में विद्यालय को अनुदान सूची में सम्मिलित किया गया। इण्टरमीडिएट कक्षाओं, वाणिज्य वर्ष 1936, कला वर्ष 1940 तथा विज्ञान वर्ष 1945 में मान्यता प्राप्त हुई। वर्ष 1992 में बालकों की शिक्षा के साथ बालिकाओं का प्रवेश भी प्रारम्भ किया गया ।

अग्रवाल जातीय शिक्षा परिषद द्वारा संचालित यह संस्था 'इलाहाबाद इन्टर कालेज', वट वृक्ष के रूप में विकसित होती हुई, वर्तमान में इलाहाबाद डिग्री कालेज, इलाहाबाद विद्या निकेतन एवं इलाहाबाद ललित कला अकादमी के स्वरूप में नगर स्थित तीन परिसरों, जीरोरोड, कीडगंज एवं बेनीगंज में शैक्षणिक विकास में अनवरत कार्य कर रही है ।

''14 सितम्बर, 1988 में जन्म लेकर 36 वर्ष की आयु में श्री काशीनाथ अग्रवाल जी 1924 में स्वर्गवासी हो गये । शहर के मध्य में स्थित आपके विशाल एवं भव्य निवास भवन (बड़ा फाटक), जौहरी टोला, जीरो रोड, इलाहाबाद के भूमिगत–तल में छापाखाना (प्रिंटिंग प्रेस) भी था। बाबू काशी नाथ जी की देश भक्ति भावना के कारण ही स्वाधीनता आन्दोलन के सदस्यों एवं जन–सामान्य के मन–मस्तिष्क में आजादी के प्रति और अधिक जोश–खरोश एवं जज्बा पैदा करने के ध्येय से आपके छापाखाने में स्वाधीनता आन्दोलन से सन्दर्भित पं० सुन्दर लाल द्वारा लिखित पुस्तक ''भारत में अंगरेजी राज'' गुप्त रूप से छप कर प्रकाशित हुई। पुस्तक प्रकाशन एवं वितरण की सूचना मिलते ही अंग्रेजी हुकूमत ने आपके घर पर छापा मारा और पुस्तक पर प्रतिबन्ध (बैन) लगा दिया। पुस्तक प्रकाशन का स्थल होने के कारण विशाल निवास भवन को बुल्डोजर से ढहा दिया। छापे में आपका सम्पूर्ण परिवार तो भाग निकला, मात्र आपके भाई बाबू दीना नाथ अग्रवाल अंग्रेजों के हाथ लग गये, जिन्हें फाँसी दे दी गयी। ''

इलाहाबाद इण्टर कालेज एवं इलाहाबाद विद्या निकेतन के वार्षिकोत्सव 2024 की इस आयोजन पर अग्रवाल जातीय शिक्षा परिषद एवं विद्यालय परिवार की ओर से स्व0 श्री काशीनाथ अग्रवाल जी की 100वीं पुण्यतिथि पर उन्हें हम नमन करते हैं । पूर्ण विश्वास है कि, संस्था की यह धरोहर जिसकी नींव राष्ट्रीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित है, का सकुशल निर्वहन हम सब मिलकर करते रहेंगे ।

शुभकामनाओं सहित,

प्रो0 पीयूष रंजन अग्रवाल
अध्यक्ष, अग्रवाल जातीय शिक्षा परिषद
प्रबंधक, इलाहाबाद इण्टर कालेज

प्रधानाचार्य की कलम से

डॉ0(श्रीमती) मंजू सिंह

छात्र-छात्राओं की रचनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने और उसमें निखार लाने का सशक्त माध्यम विद्यालय की पत्रिका होती है। पत्रिका विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों का दर्पण होती है। विद्यालय के शिक्षण कार्य के साथ-साथ छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु अनेक गतिविधियां वर्ष पर्यन्त चलती रहती है। इस पत्रिका के माध्यम से आप अवगत हो सकेगे कि विद्यालय में स्काउट खेलकूद एवं विभिन्न कौशलों के विकास के लिए अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन होता रहता है। मुझे विश्वास है कि हमारे विद्यार्थी आगे चलकर प्रबुद्ध देशभक्त एवं विविध कौशलों से परिपूर्ण सभ्य नागरिक बनेगे एवं समाज और देश के विकास में सक्रिय भूमिका निभायेगे।

मैं सभी छात्रों, शिक्षकों और सम्पादक मण्डल के सदस्यों को पत्रिका 'भारती' के प्रकाशन में उनके योगदान के लिए बधाई देती हूँ तथा सम्मानित प्रबन्ध तन्त्र एवं अन्य विद्वतजनों का आभार व्यक्त करती हूँ। जिनकी प्रेरणा और मार्गदर्शन से यह गुरूतर कार्य सम्भव हो सका है।

माननीय न्यायमूर्ति श्री विवेक कुमार बिड़ला

माननीय न्यायमूर्ति श्री विवेक कुमार बिड़ला, आपका जन्म 18 सितम्बर 1963 ई0 को एक प्रतिष्ठित बिड़ला परिवार में हुआ। आपके पूज्य पिताजी न्यायमूर्ति श्री के0के0 बिड़ला, इलाहाबाद उच्च न्यायालय, इलाहाबाद में न्यायमूर्ति रहें हैं। न्यायमूर्ति श्री विवेक कुमार बिड़ला नें आगरा से बी0काम0 और एल0एल0बी0 करने के पश्चात् 1986 ई0 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय, इलाहाबाद में वकालत प्रारम्भ की।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी न्यायमूर्ति श्री बिड़ला ने अपनी योग्यता, परिश्रम और वाक्पटुता, कानून में मर्मज्ञता एवं संयमित तथा तार्किक दृष्टिकोण से शीध्र ही एक सफल अधिवक्ता के रूप में अपने को स्थापित कर लिया। अपनी योग्यता और कार्यकुशलता से वर्ष 2014 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय, इलाहाबाद में अतिरिक्त न्यायमूर्ति तथा वर्ष 2016 से स्थायी न्यायमूर्ति के गरिमापूर्ण पद को सुशोभित कर रहें हैं।

बहुआयामी प्रतिभा के धनी न्यायमूर्ति श्री बिड़ला जी नें लॉन टेनिस, बैडमिन्टन एवं टेबल टेनिस में अनेक प्रतियोगिताएं जीती तथा आपके कुशल नेतृत्त्व में आगरा विश्वविद्यालय लॉन टेनिस में चैम्पियन बना। आपको घुड़सवारी का भी शौक है।

एक योग्य कानूनविद्, असाधारण खेल प्रतिभा तथा मृदुभाषी और प्रेरक व्यक्तित्त्व के धनी न्यायमूर्ति श्री विवेक कुमार बिड़ला का सानिध्य विद्यालय परिवार के लिए गौरव का विषय है। आपकी असाधारण प्रतिभा, कार्यकुशलता, संयमित जीवन शैली और मृदुभाषी व्यक्तित्त्व हम सबका मार्ग दर्शक बने और युवा पीढ़ी के पथ को आलोकित करे। विद्यालय परिवार आपका हृदय से अभिनन्दन करता है एवं सतत् यशस्वी जीवन की मंगलकामना करता है।

माननीय न्यायमूर्ति श्री राजेश कुमार अग्रवाल

पुरा छात्र

विद्यालय के पुरा छात्र माननीय न्यायमूर्ति श्री राजेश कुमार अग्रवाल का जन्म 5 मई 1953 ई0 को एक प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार में हुआ। आदरणीय पिता श्री राजाराम अग्रवाल (पूर्व महाधिवक्ता) के कुशल मार्गदर्शन में कक्षा 1 से 5 तक की शिक्षा सेन्ट एन्थोनी कॉलेज से तथा 6 एवं 7 की शिक्षा सेन्ट जोसेफ कॉलेज से पूर्ण की। तत्पश्चात् कक्षा 8 से 12 तक की शिक्षा इलाहाबाद इण्टर कॉलेज से पूर्ण हुई। स्नातक इलाहाबाद डिग्री कॉलेज तथा कानून में स्नातक की शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पूर्ण करने के बाद अपने पूज्य पिताजी के मार्गदर्शन में इलाहाबाद उच्च न्यायालय में अधिवक्ता के रूप में कार्य प्रारम्भ किया। कुशाग्रबुद्धि और मृदुभाषी व्यक्तित्त्व के धनी न्यायमूर्ति श्री राजेश कुमार अग्रवाल जी ने सिविल, संवैधानिक, कम्पनी, शैक्षिक और कराधान से सम्बन्धित वादों का सफलतापूर्वक निस्तारण किया। भारत सरकार के आयकर विभाग तथा निगमों एवं अनेक संस्थानों के भी आप अधिवक्ता रहे।

वर्ष 1999 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय, इलाहाबाद में न्यायमूर्ति के रूप में वर्ष 2013 में मद्रास उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायमूर्ति के रूप में तथा वर्ष 2014 से वर्ष 2018 तक सर्वोच्च न्यायालय, नई दिल्ली के प्रतिष्ठापरक न्यायमूर्ति के गुरूतर दायित्त्व का निर्वहन किया। जुलाई 2018 में राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर आपने सफलता की कड़ी में एक और स्वर्णिम अध्याय जोड़ दिया।

समस्त विद्यालय परिवार अपने यशस्वी, मृदुभाषी एवं प्रेरक व्यक्तित्त्व के धनी विद्यालय के पुराछात्र न्यायमूर्ति श्री राजेश कुमार अग्रवाल से अपने को संबद्ध कर गर्व का सुखद अनुभव कर रहा है। हम आपके स्वस्थ एवं सुखमय जीवन की मगंलकामना करते हैं तथा यह अपेक्षा करते हैं कि, आपका स्नेह हम सबके प्रति इसी तरह बना रहे।

संदेश

आर0 एन0 विश्वकर्मा
पी0ई0एस0

उप शिक्षा निदेशक (माध्यमिक)
प्रयागराज मण्डल, प्रयागराज
मो0नं0–9454457254, 9415368859
ईमेल–ddrallahabad123@gmail.com

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि प्रयागराज में स्थित इलाहाबाद इण्टर कॉलेज प्रयागराज अपनी वार्षिक पत्रिका ''भारती'' का प्रकाशन करने जा रहा है।

यह सार्वभौमिक सत्य है कि किसी समाज के विकास में शिक्षण संस्थाओं की अहम भूमिका होती है। मेरी अभिलाषा है कि इस पत्रिका में ऐसी विषय वस्तु रखी जाये, जिससे शिक्षार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों तथा समाज के हर वर्ग में नई सोच का विकास हो सकें।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु विद्यालय परिवार को मेरी हार्दिक शुभकामना।

दि0 03.2024

(आर0 एन0 विश्वकर्मा)
उप शिक्षा निदेशक (माध्यमिक)
प्रयागराज मण्डल प्रयागराज

पी0एन0 सिंह
पी0ई0एस0

जिला विद्यालय निरीक्षक,
प्रयागराज।
अ0शा0प0/ /2023–24
दिनांकः ..... मार्च, 2024

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अपार प्रसन्नता की अनुभूति प्राप्त हो रही है कि प्रयागराज संगम तट के निकट स्थित विद्यालय इलाहाबाद इण्टर कालेज प्रयागराज अपनी वार्षिक पत्रिका **"भारती"** का प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे विश्वास है कि विद्यालय की प्रकाशित हो रही पत्रिका छात्राओं के व्यक्तित्व विकास में सहायक सिद्ध होगी। पत्रिका के माध्यम से विद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को विचार अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त होगा। मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक अभीष्ट को प्राप्त करेगा।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रकट करता हूँ।

(पी0एन0 सिंह)

प्रधानाचार्य,
इलाहाबाद इण्टर कालेज
प्रयागराज।

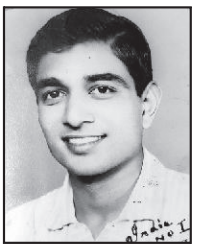

अर्जुन पदक प्राप्तकर्ता श्रद्धेय सुरेश गोयल

पुरा छात्र

बैडमिंटन के क्षेत्र में भारत का नाम अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर शिखर तक ले जाने वाले श्री सुरेश गोयल जी का पूरा नाम श्री सुरेश चन्द्र गोयल था, आपका जन्म महाराजा अग्रसेन जी के वंशज प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार में हुआ था। आदरणीय पिता जी श्री नारायण दास अग्रवाल (श्री एन0डी0 अग्रवाल) हिन्दी दैनिक समाचार पत्र स्वतंत्र भारत एवं अंग्रेजी समाचार पत्र पायनियर में वरिष्ठ पत्रकार रहे तथा वित्त एवं प्रबन्धन के बहुआयामी प्रतिभा के धनी होने के कारण अग्रवाल जातीय शिक्षा परिषद, प्रयागराज की प्रबन्ध समिति में कोषाध्यक्ष पद को भी सुशोभित किया।

श्री सुरेश गोयल जी की प्रारम्भिक से लेकर इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा इलाहाबाद इण्टर कालेज (अग्रवाल इण्टर कालेज) प्रयागराज से हुई। आपने कला वर्ग के विषयों के साथ इण्टर की परीक्षा उच्च अंको से उत्तीर्ण किया। अपनी प्रतिभा, कर्तव्यपरायणता तथा शिक्षा एवं खेल के प्रति गहरे लगाव के कारण अपने गुरूजनों के प्रिय एवं यशस्वी छात्र के रूप में जाने जाते रहे। उच्च शिक्षा इलाहाबाद डिग्री कालेज, प्रयागराज से पूरी की।

खेल के क्षेत्र में बैडमिंटन के प्रति आपकी विशेष अभिरूचि रही। 10 वर्ष की अल्पायु से ही बैडमिंटन खेलना आरम्भ किया तथा 14 वर्ष की अवस्था में ही सन् 1957 में जूनियर बैडमिंटन चैम्पियनशिप जीता। 1958 में भी आप चैम्पियन रहे। सन् 1959 से 1962 तक लगातार सीनियर वर्ग में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित जूनियर बैडमिंटन चैम्पियनशिप का पदक जीता तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आयोजित अन्तर विश्वविद्यालय बैडमिंटन में भी आप चैम्पियन रहे। वर्ष 1962, 1963, 1964, 1967 एवं 1970 में आयोजित पुरूष राष्ट्रीय बैडमिंटन चैम्पियनशिप के पदक विजेता रहे। वर्ष 1971 में युगल राष्ट्रीय बैडमिंटन चैम्पियनशिप के पदक विजेता रहे।

आपने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी आयोजित बैडमिंटन प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व किया तथा चैम्पियनशिप का खिताब जीता। वर्ष 1960, 1963, 1973 एवं 1975 में थामस कप प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व किया। यू0एस0ए0 एवं कनाडा में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय ओपेन बैडमिंटन चैम्पियनशिप प्रतियोगिता का पदक अपने नाम किया। यूरोप सहित विश्व के अन्य देशों इग्लैण्ड, पाकिस्तान आदि में आयोजित ओपेन बैडमिंटन चैम्पियनशिप में भारत की ओर से प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया तथा पदक विजेता रहे।

1972 में आयोजित म्यूनिख ओलम्पिक में पूरे विश्व से आमन्त्रित 16 बैडमिंटन खिलाड़ियों में भारत की तरफ से इकलौते बैडमिंटन खिलाड़ी के रूप में आपने प्रतिभाग किया।

सन् 1963 में भारतीय लोकोमोटिव वर्क्स, वाराणसी में चीफ लेबर वेलफेयर इन्सपेक्टर का पदभार संभाला तथा पूरे सेवाकाल में खेल के साथ-साथ अपने पद के दायित्वों का निर्वहन पूरी ईमानदारी से किया। सेवा के प्रति ईमानदारी एवं समर्पण का भाव तथा खेल के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्धियों के कारण वाराणसी के डीजल लोकोमोटिव वर्क्स हाल का नाम सुरेश गोयल बैडमिंटन हाल कर दिया गया। आपको वर्ष 1967 में अर्जुन अवार्ड से सम्मानित किया गया। भारतीय रेलवे बोर्ड द्वारा समय-समय पर अनेकों अवार्ड एवं पुरस्कार से सम्मानित किया जाता रहा।

आपकी प्रतिभा एवं उपलब्धियों को संक्षेप में प्रस्तुत करना सम्भव नही है। विद्यालय अपने यशस्वी एवं प्रतिभावान पुरा छात्र के प्रति गर्व का अनुभव करता है। आपका भावपूर्ण स्मरण ही हम सबका पथ प्रदर्शक बने तथा आपकी स्मृति मात्र से एक नयी उर्जा का संचार हो। आपकी गुरूतर उपलब्धियाँ हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत बने, ईश्वर से यही कामना करते हैं।

सम्पादकीय

डॉ0 अनन्त कुमार गुप्त
प्रवक्ता (वाणिज्य)

विद्यालय इलाहाबाद इण्टर कालेज, प्रयागराज 'अग्रवाल जातीय शिक्षा परिषद' के कुशल निर्देशन में संचालित होता है। इसके संचालनार्थ एवं विविध क्रिया कलाप सम्यक् निरीक्षणार्थ इलाहाबाद इण्टर कालेज प्रबन्ध समिति का गठन किया गया जिसके नेतृत्व में विद्यालय को प्रदेश के शिक्षण संस्थानों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। विद्यालय की इस उपलब्धि में उन महापुरुषों के सतत् प्रयास, अथक परिश्रम एवं महती अनुकम्पा का प्रतिफल है जिन्होंने प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष का पदभार सँभाला। ये परम उदार पुरुष रहे श्रद्धेय श्री बेनी प्रसाद अग्रवाल, श्रद्धेय श्री संगम लाल अग्रवाल, श्रद्धेय श्री राधा कृष्ण अग्रवाल, श्रद्धेय श्री राधेश्याम अग्रवाल, श्रद्धेय श्री कन्हैया लाल गोविल, श्रद्धेय श्री बाबू रामकृष्ण अग्रवाल, श्रद्धेय श्री राजाराम अग्रवाल एवं श्रद्धेय श्री भरतजी अग्रवाल। वर्तमान में यह पद श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल सुशोभित कर रहे हैं। आप अति कर्मठ, परिश्रमी, सत्यनिष्ठ, प्रशासन कुशल एवं कर्तव्यनिष्ठ हैं आपके कुशल निर्देशन, मार्गदर्शन एवं सहयोग से विद्यालय सतत् विकास की ओर अग्रसर है।

विद्यालय के सफल संचालन एवं विकास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका प्रबन्धक/मंत्री की होती है जिनके प्रबन्धन, प्रशासन एवं कुशल निर्देशन में संस्था उत्तरोत्तर प्रगति करती है। प्रबन्ध समिति में इस पद का निर्वहन पूर्व में किया है श्रद्धेय श्री लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, श्रद्धेय श्री रामस्वरूप गुप्त, श्रद्धेय श्री रायसाहब हरिराम अग्रवाल, श्रद्धेय श्री लोकमणि लाल अग्रवाल, श्रद्धेय श्री शम्भूनाथ अग्रवाल, श्री राकेश रंजन अग्रवाल एवं श्री राजीव रंजन अग्रवाल। इस महत्वपूर्ण पद को वर्तमान में एक लम्बी अवधि से सुशोभित कर रहे हैं प्रोफेसर (डॉ0) पीयूष रंजन अग्रवाल। आप अद्भुत क्षमता, प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी एवं माँ सरस्वती के वरद पुत्र हैं। अपनी कार्यकुशलता, सहजता, सहृदयता के कारण आपने जो सम्मान प्राप्त किया है अत्यन्त सराहनीय है। शिक्षा के क्षेत्र में आपने अभूतपूर्व योगदान के रूप में आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उ0प्र0) एवं डॉ0 हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म0प्र0) में प्रोफेसर तथा मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान प्रयागराज (उ0प्र0), के प्रबन्ध विभाग में प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष में महत्वपूर्ण पद को सुशोभित किया है। आप वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0) तथा अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवां (म0प्र0) में शिक्षा जगत के सर्वोच्च पद कुलपति का पद सुशोभित किया है। आप अग्रवाल जातीय शिक्षा परिषद् में अध्यक्ष पद को भी सुशोभित कर रहे हैं। आपके मार्गदर्शन एवं कुशल नेतृत्व में अग्रवाल जातीय शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित इलाहाबाद डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद इण्टर कालेज, प्रयागराज, ललित कला अकादमी, इलाहाबाद विद्या निकेतन सतत् प्रगति करता हुआ विकास की नई ऊँचाइयों को छू रहा है।

अर्थिक दृष्टि से संस्था को मजबूत बनाए रखने का दायित्व प्रबन्ध समिति के कोषाध्यक्ष का होता है। इस पद को पूर्व में सुशोभित किया है श्री राम स्वरूप अग्रवाल, श्री हरिश्चंद्र अग्रवाल, श्री एन0 डी0 अग्रवाल, श्री जे0 डी0 जैन, डॉ0 जी0 सी0 अग्रवाल, श्री प्रेम मोहन अग्रवाल, श्री सूरज प्रसाद अग्रवाल, श्री संतोष कुमार अग्रवाल। वर्तमान में कोषाध्यक्ष के इस महत्वपूर्ण पद को सुशोभित कर रहे हैं श्री विजय कृष्ण। आप एक कुशल व्यवसायी के साथ वित्त एवं प्रबंधन के क्षेत्र में बहुआयामी प्रतिभा के धनी व्यक्ति हैं। आप सदैव विद्यालय की प्रगति एवं विकास के लिये तल्लीन रहते

हैं। आपकी सौम्यता, सहजता एवं उदारता तथा सहयोग एवं विकासशील भावना से विद्यालय अनवरत प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

विद्यालय में पठन-पाठन एवं अनुशासित माहौल बनए रखने का दायित्व प्रधानाचार्य का होता है, वर्तमान में इस पद को सुशोभित कर रही हैं डॉ0 (श्रीमती) मंजू सिंह जो शिक्षक-शिक्षिकाओं, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों, छात्र-छात्राओं एवं अभिभावकों के बीच रहकर विद्यालय हित में सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर रही है।

विद्यालय के सफल संचालन हेतु अनेक समितियाँ है। **प्रवेश समिति-** डॉ0 (श्रीमती) इन्दु सिंह, डॉ0 अनन्त कुमार गुप्त, श्रीमती मीनाक्षी शर्मा, श्री महेश्वरी प्रसाद संत। **परीक्षा समिति-** डॉ0 (श्रीमती) इन्दु सिंह, डॉ0 अनन्त कुमार गुप्त, श्री बलराम, श्री महेश कुमार श्रीवास्तव, श्री राजेन्द्र प्रताप सिंह। **अनुशासन समिति -** डॉ0 जय प्रकाश शर्मा, श्रीमती मीनाक्षी शर्मा, श्री राजेन्द्र प्रताप सिंह, श्री अजय बहादुर सिंह, श्रीमती मीनाक्षी अग्रवाल, डॉ0 मुकेश त्रिपाठी। **सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति-** श्री बलराम, श्रीमती मीनाक्षी अग्रवाल, श्रीमती रूबी अग्रवाल, श्री कुँवर मृगेन्द्र सिंह, श्रीमती कौशिकी अग्रहरि।

वर्षपर्यन्त पठन-पाठन के साथ अनेक पाठ्य सहगामी गतिविधियां विद्ययालय में करायी जाती हैं, यथा - निबन्ध-लेखन, भाषण-प्रतियोगिता, रंगोली, मेंहदी प्रतियोगिता आदि। इन प्रतियोगिताओं को सम्पन्न कराने में छात्र वर्ग में डॉ0 देवी शरण, डॉ0 मुकेश त्रिपाठी, श्री सुखराम, श्री चन्द्र प्रकाश तथा छात्रा वर्ग में श्रीमती मीनाक्षी अग्रवाल, श्रीमती शालिनी कनौजिया, श्रीमती रूबी अग्रवाल, श्री अमर कुमार, श्रीमती कौशिकी अग्रहरि का योगदान रहता है। सभी गतिविधियों को सुचारू रूप से सम्पन्न कराने में विद्यालय के सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं अन्य शिक्षणेत्तर कर्मचारियों का पूर्ण सहयोग रहता है।

छात्र-छात्रओं के सर्वांगीण विकास हेतु विद्यालय में सुसज्जित कक्षायें, विज्ञान विषय भैतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान की प्रयोगशालायें हैं। विद्यालय में कम्प्यूटर कक्ष, कला कक्ष, गृहविज्ञान कक्ष एवं भव्य पुस्तकालय है। विद्यालय में सुंदर क्रीड़ा स्थल है जहां छात्र-छात्राओं को विभिन्न खेलों का प्रशिक्षण विद्यालय के योग्य एवं कर्मठ क्रीड़ाध्यक्ष से प्राप्त होता है। खेल में विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने राष्ट्रीय स्तर तक प्रतिभाग कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। विद्यालय में छात्र-छात्रओं को स्काउट-गाइड का प्रशिक्षण विभिन्न सोपान में कराए जाते हैं। विद्यालय के स्काउट-गाइड ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभाग करके विद्यालय का मान बढ़ाया।

पत्रिका 'भारती' का यह संस्करण छात्र-छात्राओं, शिक्षक-शिक्षकाओं के सहयोग एवम् माननीय प्रधानाचार्य के मार्गदर्शन में प्रबंध समिति के सम्मानित पदाधिकारियों एवं सदस्यों, शिक्षा विभाग के सम्मानित अधिकारियों एवं अभिभावकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। आशा है कि यह पत्रिका सम्पूर्ण जनमानस के भावानुकूल होगी। पुनः हम सभी के प्रति हृदय से अभिनन्दन करते हुए आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

खेल-कूद में विद्यालय की उपलब्धियाँ

डॉ0 जय प्रकाश शर्मा

प्रवक्ता, क्रीड़ाध्यक्ष

खेलकूद :- हमारा यह विद्यालय खेलकूद एवं बालीबाल, एथलेटिक्स, बैडमिंटन, खो-खो, कबड्डी, कुश्ती आदि में सदा अग्रणी रहा है।

हमारे पूर्व प्रबन्धक परम श्रद्धेय स्व. बाबू शम्भूनाथ अग्रवाल जिनका 1910 में रोपित नव शिक्षा तरु को वर्तमान शिक्षा वट वृक्ष बनाने में अपना अनोखा प्रशंसनीय योगदान रहा है, बालीबाल के राष्ट्रीय खिलाड़ी रहे हैं।

हमारे पूर्व कोषाध्यक्ष स्व. एन.डी.अग्रवाल जी के सुपुत्र स्व. सुरेश गोयल जी दैवयोग से अत्यन्त अल्पायु में ही हम सबसे बिछुड़ गये थे बैडमिन्टन में अपनी अन्तर्राष्ट्रीय सफलता के लिए चिर स्मरणीय रहेगें। ये महान विभूतियाँ हमारी युवा पीढ़ी के प्रेरणा स्रोत है।

श्री सुरेश गोयल जी 20 जून 1943 में उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में जन्म हुआ था। इन्होंने 10 वर्ष की उम्र में बैडमिंटन खेलना शुरू किया और 14 साल की उम्र में राष्ट्रीय जूनियर चैम्पियन बने। वह 1962 से 1970 तक पॉच मौकों पर पुरुष राष्ट्रीय युगल और मिश्रित युगल में राष्ट्रीय खिताब भी जीते। उन्हें 1967 मे अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने 1960-61 में थॉमस कप में भारत का प्रतिनिधित्व किया और 1969-70 में जयपुर में इंडोनेशिया के खिलाफ भारतीय टीम की कप्तानी की। उन्होंने 1967 में यू.एस. ओपेन बैडमिंटन चैम्पियनशिप में भी खेला और फाइनल में पहुँचे जहां वह डेनमार्क के एरलैंड कोप्स से हार गये। उन्होंने कई बार प्रतिष्ठित ऑल इंग्लैड चैम्पियनशिप में खेला। इन्होंने 1966 किंग्स्टन और 1970 एडिनबर्ग राष्ट्र मंडल खेलो और 1972 म्यूनिख ओलंपिक खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 35 वर्ष की आयु में वाराणसी हिंदू विश्वविद्यालय के एम्फीथिएटर मैदान के रनिंग ट्रैक पर व्यायाम करते समय हृदयगति रुकने से मृत्यु हो गई।

अब खेल और शारीरिक शिक्षा को माध्यमिक शिक्षा परिषद् ने इण्टर तथा हाईस्कूल में यू.पी. बोर्ड के छात्र-छात्राओं को सन् 2006 से एक विषय के रूप में प्रभावी मानते हुए अनिवार्य विषय बना दिया गया है, जिसमें लिखित और प्रयोगात्मक परीक्षायें क्रमशः 50,50 अंक की होगी तथा 6 से 12 तक शारीरिक शिक्षा अनिवार्य विषय माना गया है।

डॉ. जय प्रकाश शर्मा क्रीडाध्यक्ष इलाहाबाद इण्टर कालेज, प्रयागराज 67वीं उत्तर प्रदेश विद्यालयीय खो-खो प्रतियोगिता दिनांक 17 से 20 अक्टूबर 2023 तक अयोध्या में आयोजित प्रतियोगिता में सीनियर व जूनियर बालक वर्ग के चयनकर्ता हेतु डॉ. भीमराव अम्बेडकर राज्य विद्यालयीय क्रीड़ा संस्थान, स्टेडियम, अयोध्या (उ.प्र.) के प्राचार्य श्री भगती सिंह के द्वारा नियुक्त किए गये थे। अपनी लगन और तत्परता से इस परितोषिक से डा. शर्मा ने पूरे विद्यालय परिवार के साथ-साथ प्रयागराज जनपद को गौरवान्वित किया है। विद्यालय परिवार हृदय से बधाई देता है और भविष्य में आगे बढ़ने की मंगल कामना करता है।

नगर दक्षिण खो-खो प्रतियोगिता – विद्यालय के बालक वर्ग की प्रथम बालिक वर्ग द्वितीय स्थान अर्जित किया। विद्यालयीय नगर दक्षिण खो-खो प्रतियोगिता विद्यालय के मैदान पर दिनांक 14 सितम्बर 2023 को आयोजित हुई जिसमें इलाहाबाद इण्टर कालेज बालक वर्ग नें 28वें वर्ष चल बैजन्ती पर कब्जा कर प्रथम स्थान बरकरार रखा। बालिका वर्ग को 21वें वर्ष चल वैजन्ती पर द्वितीय स्थान पर सन्तोष करना पड़ रहा है।

जनपद विद्यालयीय खो-खो प्रतियोगिता – नगर दक्षिण बालक वर्ग नें द्वितीय स्थान अर्जित किया तथा विद्यालय के दो छात्र खिलाड़ियों का चयन किया गया। जनपद विद्यालयीय खो-खो प्रतियोगिता बालक एवं बालिका वर्ग की विद्यालय के मैदान पर लगातार आयोजित हो रही है। दिनांक 29 सितम्बर 2023 को बालिका वर्ग की आयोजित हुई जिसमें जनपद के सभी सम्भाग की टीमों ने भाग लिया प्रतियोगिता का उद्घाटन विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. मंजू सिंह ने किया। राजकीय बालिका इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य श्रीमती नीलम मिश्रा के द्वारा समापन व पुरस्कार वितरण हुआ। वहीं 30 सितम्बर 2023 की बालक वर्ग का भी प्रतियोगिता आयोजन हुआ। प्रतियोगिता का उद्घाटन नगर दक्षिण के खेल संयोजक श्री संदीप राठौर के द्वारा किया गया तथा विजेता क्रम के खिलाड़ियों को पुरस्कार वितरण जिला प्रधानाचार्य परिषद प्रयागराज के श्री अनय प्रताप सिंह के द्वारा किया गया। सभी आगुन्तकों का स्वागत विद्यालय के प्रधानाचार्य डा. मंजू सिंह के द्वारा हुआ कार्यक्रम का संचालन क्रीड़ाध्यक्ष डा. जय प्रकाश शर्मा ने किया और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनन्त कुमार गुप्ता के द्वारा दिया गया।

मण्डल विद्यालयीय खो-खो प्रतियोगिता – प्रयागराज की टीम सभी वर्गों में विजेता रही तथा विद्यालय के दो छात्र टीम में रहे। मण्डल विद्यालयीय खो-खो प्रतियोगिता विद्यालय के मैदान पर दिनांक 05 अक्टूबर 2023 बालक वर्ग तथा बालिका वर्ग का आयोजन हुआ जिसमें प्रतापगढ़, फतेहपुर, कौशाम्बी एवं प्रयागराज की टीमों ने भाग लिया आयोजन सीनियर व सब जूनियर दो वर्गों में आयोजित हुई। प्रतियोगिता का शुभारम्भ विद्यालय के प्रधानाचार्य डां. मंजू सिंह के द्वारा किया गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि उप शिक्षा निदेशक (मा.) चतुर्थमण्डल श्री.आर.एन. विश्वकर्मा जी द्वारा किया गया तथा विजेता क्रम के खिलाड़ियों को पुरुस्कार वितरण किया गया। अतिथियों का स्वागत विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. मंजू सिंह के द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रवक्ता क्रीड़ाध्यक्ष डा. जय प्रकाश शर्मा ने किया वही धन्यवाद ज्ञापन का स्वागत प्रवक्ता डॉ. अनन्त कुमार गुप्ता के द्वारा किया गया।

नगर दक्षिण कुश्ती प्रतियोगिता :- नगर दक्षिण विद्यालयीय कुश्ती प्रतियोगिता सेवा समिति विद्या मन्दिर इण्टर कालेज में दिनांक 04 सितम्बर 2023 को आयोजित प्रतियोगिता में विद्यालय के छात्र कक्षा-XII AB श्रेयांग अग्रहरि ने भाग लेते हुए 51kg में विजेता स्थान अर्जित किया वही कक्षा XI AB आदित्य पाल अपने वेट पर 48Kg में विजेता होने का गौरव प्राप्त किया।

विद्यालयीय वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता

बालक वर्ग :- इलाहाबाद इण्टर कालेज के प्रागंण में दिनांक 30 दिसम्बर 2023 को हुई। प्रतियोगिता का उद्घाटन और पुरस्कार वितरण विद्यालय के प्रधानाचार्य डा. मंजू सिंह के कर कमलों द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के प्रवक्ता क्रीड़ाध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश शर्मा द्वारा किया गया। डॉ. अनन्त कुमार गुप्ता ने आगुन्तकों का स्वागत किया गया। व्यक्तिगत चैपिंयनशिप सीनियर वर्ग में हसन रजा कक्षा XII SB ने अर्जित किया वही जूनियर वर्ग में निर्भय श्रीवास्तव कक्षा VIII B ने अर्जित किया।

बालिका वर्ग :- विद्यालय प्रागंण में ही दिनांक 31 दिसम्बर 2023 को आयोजित हुई जिसमें सीनियर वर्ग में कोमल कक्षा XI C.G ने अर्जित किया वही जूनियर वर्ग में पलक गौड़ कक्षा VII G ने व्यक्तिगत चैपिंयनशिप जीत कर ट्राफी पर कब्जा किया।

माननीय अध्यक्ष, प्रबन्धक, कोषाध्यक्ष एवं सभी पदाधिकारीगण व सदस्यों तथा विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं शिक्षक/शिक्षिकाओं तथा विद्यालय के समस्त स्टॉफ के आशीर्वाद से ही हमारे विद्यालय की उपलब्धियाँ एवं सफलता लगातार मिल रही है। समस्त कर्मचारियों के सहयोग से ही कार्यक्रम सफल हुये है। सभी के प्रति हम हृदय से आभार प्रदर्शन करते है।

मातृभूमि वन्दन

वन्दे मातरम्।

सुजलाम्, सुफलाम्, मलयज शीतलाम्,

शस्यश्यामलाम्, मातरम् ।

वन्दे मातरम्!

शुभ्रज्योत्स्नां पुलकितयामिनीम्

फुल्लकुसुमित-द्रुमदल शोभिनीम्

सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीम्

सुखदां वरदां मातरम् ।

वन्दे मातरम् ।।

राष्ट्रगान

जन-गण-मन अधिनायक, जय हे
भारत-भाग्य विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा-
द्राविड़-उत्कल बंग
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल-जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा
जन-गण-मंगल दायक जय हे
भारत-भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

दैनिक विद्यालय प्रार्थना

वह शक्ति हमें दो दयानिधे, कर्तव्य-मार्ग पर डट जावें।
पर सेवा पर उपकार में हम, जग जीवन सफल बना जावें।।

हम दीन दुखी निबलों, विकलों के सेवक बन संताप हरें।
जो हैं अटके भूले भटके, उनको तारे खुद तर जावें।।

छल दम्भ द्वेष पाखण्ड झूठ, अन्याय से निशि-दिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना, शुचि प्रेम सुधारस बरसावें।।

निज आन-मान मर्यादा का, प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस पुण्य भूमि पर जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जावें।

वह शक्ति हमें दो दयानिधे, कर्तव्य-मार्ग पर डट जावें।

स्काउटिंग गाइड की अनिवार्यता

श्रीमती मीनाक्षी अग्रवाल
सहायक अध्यापिका एवं गाइड कैप्टन

परिचय – स्काउटिंग गाइडिंग युवाओं के व्यक्तित्व विकास का अनुपम आंदोलन है। यह एक सैन्य अधिकारी 'लार्ड रॉबर्ट स्टीफेन्सन, स्मिथ बेडेन पॉवेल' द्वारा 1907 में प्रारंभ किया गया। वर्तमान में स्काउट गाइड संगठन के 216 देशों और उपनिवेशों में संचालित है। लगभग 5 करोड़ सदस्यों के साथ यह विश्व का सबसे बड़ा वर्दीधारी संगठन है।

आंदोलन में 3 वर्ष की आयु से 25 वर्ष की आयु के बालक-बालिका, युवक-युवतियों के लिए मनोवैज्ञानिक आधार पर प्रशिक्षण एवं गतिविधियां उपलब्ध हैं। यह जीवनोपयोगी गति-विधि उन्हें सर्वांगीण रूप से विकास कर स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का उत्तरदायी नागरिक बनने में मदद करती है।

प्रमुख शाखाएँ – बन्नी, कब, बुलबुल, स्काउटिंग, गाइडिंग, रोवरिंग, रेंजरिंग।

गतिविधियाँ – शिविर जीवन कैम्प क्राफ्ट, साहसिक गतिविधियाँ, आत्म रक्षक एवं जीवन रक्षक कलाएं एवं सामुदायिक विकास, कौशल विकास एवं दक्षता, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियां स्वावलम्बन।

पुरस्कार (बालक/बालिकाओं) के लिए – स्काउट-गाइड के सदस्यों को निर्धारित पाठ्यक्रम पूर्ण करने पर राज्य स्तर पर राज्यपाल महोदय द्वारा एवं राष्ट्रीय स्तर पर महामहिम राष्ट्रपति महोदय द्वारा हस्ताक्षरित प्रमाण-पत्र विशेष समारोह में प्रदान किये जाते है। यह गौरव वर्तमान में स्काउंट-गाइड को ही प्राप्त है।

स्काउटिंग गाइडिंग अनिवार्य क्यों – वर्तमान समय में बालक-बालिकाओं, युवक-युवतियों सामाजिक जीवन से विमुख होकर एकाकी होते जा रहे हैं। अभिभावकों का भी रुझान अधिकाधिक अंक अर्जित करवाने की ओर रहता है। फलस्वरूप बालक, बालिकायें युवक युवतियाँ, शैक्षणिक योग्यता तो अर्जित कर लेते हैं, लेकिन सामाजिक जीवन से अनभिज्ञ रहते हैं, और जीवन उपयोगी कलाओं को नहीं सीख पाते है। यही कारण है कि विपरीत परिस्थितियों का दृढ़तापर्वूक सामना नहीं कर पाते है।

निजी विद्यार्थियों, महाविद्यालयों, उच्च शिक्षण संस्थानों के छात्र वर्ग को जीवन उपयोगी एवं जीवन रक्षक कलाओं के प्रशिक्षण युक्त युवाओं के रूप में तैयार कर समुदाय के उत्तरदायी नागरिक के रूप में तैयार किया जा सकता है। इस कार्य हेतु स्काउंट गाइड संगठन एक सुनहरा अवसर प्रदान करता है।

अभिभावक ध्यान दें – बालक-बालिकाओं, युवक-युवतियों को स्काउट गाइड संगठन के सदस्य बनाने के लाभ-

1. इन्हें सामाजिक रूप से विकसित होने का अवसर मिलेगा।
2. आवासीय शिविरों के माध्यम से परस्पर मेल-जोल बढ़ाने के अवसर मिलेंगें।
3. अपने आयु वर्ग के साथ प्रकृति के मध्य सीखने का अवसर।
4. व्यवहारिक ज्ञान में वृद्धि।

5. करके सीखने का अवसर।

6. नियमित अनुशासित जीवन जीने का अवसर।

7. विपरीत परिस्थितियों में जीवने जीने की कला सीखने का अवसर।

8. राष्ट्रपति पुरुस्कार प्रमाण-पत्र पाने का अवसर एवं भारत सरकार के विभिन्न नौकरियों में विशेष छूट।

स्काउट गाइड करने से क्या लाभ होता है?

1. मानवीय गुणों के विकास के साथ वे संस्कारिक नागरिक बनकर समाज व राष्ट्र के लिये उपयोगी बनते है?

2. अपने में नेतृत्व क्षमता विकसित कर साहसिक कार्यक्रमों में भागीदारी निभाकर सदैव स्वस्थ व तनावमुक्त होते हैं।

3. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित गतिविधियों में भाग लेने का अवसर प्राप्त कर स्वावलम्बी श्रम के प्रति निष्ठावान सृजनात्मक क्षमता का विकास करने का अवसर प्राप्त करते हैं।

4. स्काउटिंग के माध्यम से महामहिम राज्यपाल महोदय के हस्ताक्षरित राज्य पुरस्कार व महामहिम राष्ट्रपति के महोदय के हस्ताक्षरित राष्ट्रपति अवार्ड प्राप्त करते है।

5. स्काउट-गाइड प्रमाण पत्र के माध्यम से विभिन्न सरकारी नौकरियों में मेरिट में लाभ मिलता है।

6. राष्ट्रपति पुरस्कार प्रमाण-पत्र के लिए भारतीय रेलवे में स्काउट गाइड के लिए स्पेशल वैकेन्सी निकलती है।

7. विभिन्न विद्यालय, एवं महाविद्यालय में नामांकन के समय अतिरिक्त छूट दिया जाता है।

8. अन्य विभिन्न विभागों में स्काउट गाइड प्रमाण पत्र का बहुत लाभ मिलता है।

जयघोष

जन्म जहाँ पर - हमने पाया
अन्न जहाँ के - हमने खाया
वस्त्र जहाँ के - हमने पहना
वह है प्यारा - देश हमारा
उसकी रक्षा - हम करेंगे, हम करेंगे, हम करेंगे
उसकी सेवा - हम करेंगे, हम करेंगे, हम करेंगे
कैसे करोगे - तन से करेंगे, मन से करेंगे,
धन से करेंगे
भारत माता - की जय
भारत माता - की जय
भारत माता - की जय

स्काउट गाइड झंडा गीत

भारत स्काउट गाइड झंडा ऊँचा सदा रहेगा,
ऊँचा सदा रहेगा झंडा ऊँचा सदा रहेगा,

नीला रंग गगन सा विस्तृत भ्रातृ भाव फैलाता
त्रिदल कमल नित तीन प्रतिज्ञाओं की याद दिलाता,
और चक्र कहता है प्रतिपल आगे कदम बढ़ेगा,

ऊँचा सदा रहेगा झंडा ऊँचा सदा रहेगा,
भारत स्काउट गाइड झंडा ऊँचा सदा रहेगा

स्काउट/गाइड का प्रेरणात्मक गीत

एक देश है, एक वेश है, एक हमारा नारा है,
हम स्काउट हैं भारत के, भारत देश हमारा है।

हमने भारत की रचना में, मेहनत की जी तोड़ है,
इस धरती पर बलिदानों की, कथा लिखी बेजोड़ है।

यहाँ नहीं पुरुषों से पीछे, रही कभी भी नारियाँ,
इसमें जलती रही सदा ही, जीवन की चिनगारियाँ।।

स्काउट/गाइड प्रार्थना

दया कर दान भक्ति का, हमें परमात्मा देना।
दया करना, हमारी आत्मा में शुद्धता देना।।

हमारे ध्यान में आओ, प्रभु आँखों में बस जाओ।
अंधेरे दिल में आकर के परम ज्योति जगा देना।।

बहा दो प्रेम की गंगा, दिलों में प्रेम का सागर।
हमें आपस में मिलजुल कर प्रभु रहना सिखा देना।।

हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा।
सदा ईमान हो सेवा, व सेवक चर बना देना।।

वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना।
वतन पर जाँ फिदा करना, प्रभु हमको सिखा देना।।

दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।
दया कर दान भक्ति का हमें परमात्मा देना।।

हाईस्कूल तक विज्ञान विषय का महत्व

श्रीमती मीनाक्षी शर्मा
प्रवक्ता रसायन

विज्ञान-प्राकृतिक घटनाओं का प्रायोगिक प्रेक्षणों एवं वैज्ञानिक तर्कों के आधार पर विस्तृत, गहन, एवं सुव्यवस्थित ज्ञान ही विज्ञान है।

इस प्रकार विज्ञान एक ऐसा विषय है जो हमें आसपास की दुनिया को समझने और उसकी कार्यप्रणाली को समझने में मदद करता है। विज्ञान की पढ़ाई कक्षा 10 तक अति महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें विभिन्न विषयों का समावेश है जैसे कि भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान एवं गणित। यह छात्रों को विज्ञान के आधारभूत सिद्धान्तों, विधियों और तकनीकों को समझने और उन्हें अपने जीवन में लागू करने की क्षमता प्रदान करती है।

विज्ञान की पढ़ाई हमें विचारशीलता और विचार करने की क्षमता प्रदान करती है। यह बौद्धिक क्षमता का विकास करती है। यह हमें प्रश्नों को समझकर उनके जवाब खोजने के लिये प्रेरित करती है जिससे हमारी सोचने की क्षमता विकसित होती है।

विज्ञान हमें तकनीकी और वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग करना सिखाता है जिससे नित नये बन रहे उपकरण, मशीन, यंत्र को समझने व उपयोग में आसानी होती है और व्यक्ति अपना जीवन बेहतर तरीके से जी सकता है। कक्षा 10 तक विज्ञान की पढ़ाई हमें अधिक शिक्षित और सफल नागरिक बनने में मदद करती है

यह हममें आत्मविश्वास और स्वतंत्रता की भावना प्रदान करती है और हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उत्साहित करती है।

निष्कर्ष के रूप में कक्षा 10 तक की विज्ञान की पढ़ाई हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें विज्ञान के महत्व को समझने और उसे अपने जीवन में उपयोग करने की क्षमता प्रदान करती है। यह हमें समस्याओं का समाधान करने के लिये तैयार करती है और हमें एक बेहतर और उत्तम भविष्य की दिशा में आगे बढ़ने में मदद करती है। इससे बच्चों का दृष्टिकोण इस प्रकार विकसित होता है जिससे जीवन में होने वाली घटनाओं को समझने उसे हल करके जीवन में आगे बढ़ने में सहायक होती है। अतः 10वीं तक विज्ञान की पढ़ाई सभी के लिये अति आवश्यक है।

स्काउटिंग और गाइडिंग की सामान्य जानकारी एवं जीवन में महत्व

डॉ. मुकेश त्रिपाठी
सहायक अध्यापक एवं स्काउट मास्टर

भारत में स्काउटिंग पं. मदन मोहन मालवीय, एनी बेसेंट, डॉ. हदय नाथ कुंजरू, श्रीराम बाजपेई, पं. जवाहर लाल नेहरू के प्रयासों से 1909 में आई। शुरुआत में इसे बालचर सेवा समिति, बॉयज स्काउट्स एसोसियेशन, हिंदुस्तान स्काउट्स एसोसियेशन, गर्ल गाइड इन इंडिया जैसे अलग-अलग नामों से चलाया जाता था। 7 नवंबर 1950 को आजादी के बाद भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री अब्दुल कलाम आजाद की अध्यक्षता में सभी संगठनो को मिलाकर एक संगठन बनाया गया। इसका नाम भारत स्काउट और गाइड Bharats Scout and Guids रखा गया। आइये जानते हैं स्काउट एंड गाइड का महत्व Importance of Scout and Guide इसके जीवन मे क्या लाभ हैं। यह किस तरह काम करता है और इसका स्वरूप क्या हैं।

स्काउट एंड गाइड विश्व का सबसे बड़ा वर्दीधारी संगठन है। यह बचपन से ही व्यक्तित्व के विकास की नींव रखता है। एक बेहतर नागरिक बनाने के लिए समाज के प्रति जिम्मेदारी और कर्त्तव्यों की प्रेरणा स्काउट और गाइड में दी जाती है। 3 वर्ष से 25 वर्ष की उम्र के बच्चे स्काउट एंड गाइड का हिस्सा होते है। इसके लिए उम्र की सीमा और उसके कैडर तय किये गये हैं।

स्काउट एंड गाइड एक सैन्य अधिकारी लॉर्ड रॉबर्ट स्टीफेन्सन स्मिथ बेडन पावेल ने 1907 में शुरु किया। वर्तमान मे स्काउट गाइड संगठन विश्व के 216 देशो में और उपनिवेशों में संचालित है। यह मनोवैज्ञानिक आधार पर स्टूडेंट्स का विकास कर स्थानीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय का उतरदायी नागरिक बनने में मदद करती है। उम्र के हिसाब से अलग-अलग विंग बनाई गई हैं।

- बन्नी – 3 से 5 वर्ष के शिशुओं के लिए संचालित सबसे छोटी शाखा।
- कब – 5 से 10 वर्ष के बालकों के लिए संचालित गतिविधि रुडयार्ड किपलिंग के प्रसिद्ध पुस्तक ''दि जंगल बुक'' पर आधारित, यह 1916 में शुरु किया गया।
- बुलबुल – 5 से 10 वर्ष के बालिकाओं की गतिविधि, एक विशेष कहानी ''तारा की स्टोरी'' पर संचालित, यह 1916 में शुरू हुई।
- स्काउटिंग – 10 से 17 वर्ष के बालकों की गतिविधि लार्ड बेडन पावेल के सैन्य अभ्यास पर जीवन के लिए उपयोगी प्रशिक्षण। यह प्रशिक्षण 1907 में शुरू किया गया।
- गाइडिंग – 10 से 17 के बालिकाओं की गतिविधि जीवनोपयोगी कला का प्रशिक्षण। यह 1910 में प्रारम्भ किया गया।
- रोवरिंग – 15 से 25 वर्ष के युवाओं की गतिविधि, व्यक्तित्व विकास एवं जीवन उपयोगी कलाओं का प्रशिक्षण। साहसिक गतिविधियाँ, समाजसेवा, सामुदायिक सेवा का प्रशिक्षण। यह प्रशिक्षण 1918 में शुरू किया गया।

वर्तमान समय में हमें प्रत्येक विद्यालय में स्काउट और गाइड की शिक्षा दी जाती है। हमारे विधालय में यह कक्षा 8 तक अनिवार्य है नैतिक शिक्षा के रूप में यह हाईस्कूल तक अनिवार्य है। इससे बच्चों का मानसिक, शारीरिक नैतिक सामाजिक, और आध्यात्मिक विकास होता है। इसीलिए इस शिक्षा को हमें और अधिक बढ़ावा देना चाहिए।

हमारे कॉलेज में स्काउटिंग और गाइडिंग को बहुत महत्व दिया जाता है। स्काउटिंग में ऐसे कार्यकम रखे जाते हैं जो बच्चों का चारित्रिक निर्माण करते हैं और शारीरिक विकास करते हैं। बच्चों में सामाजिक एवं जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न होती है। स्काउटिंग गाइडिंग एक खेल है, ऐसा स्काउटिंग और गाइडिंग के संस्थापक लार्ड बेडेन पावेल जी ने भी कहा है। यह बच्चों में बौद्धिक, नैतिक और शारीरिक विकास उत्पन्न करती है और सेवा की भावना जागृत करती है और ईश्वर के प्रति वास्तविक प्रेम, सम्मान एवं भक्ति की भावना उत्पन्न करती है। स्काउटिंग गाइडिंग शिक्षा अनेक प्रकार से की जाती है। जैसे – खेल, प्रदर्शन, अभिनय, प्रयोग, व्याख्यान तथा पुस्तकों के माध्यम से दी जाती है। ऐसा कोई दूसरा पाठ्येतर कार्य नही है जो स्काउटिंग गाइडिंग की तरह बच्चों का सम्पूर्ण विकास कर सके। यह स्काउटिंग गाइडिंग की शिक्षा दीक्षा उन्हें एक योग्य देशभक्त, समाजसेवी और कुशल नागरिक बननें की प्रेरणा देती है।

कुछ करना है तो डटकर चल

कंचन यादव
11CG

कुछ करना है, तो डटकर चल।
थोड़ा दुनिया से, हटकर चल।
लीक पर तो सभी चल लेते हैं।
कभी इतिहास को पलटकर चल।
बिना काम के मुकाम कैसा?
बिना मेहनत के दाम कैसा?
जब तक ना हाँसिल हो मंजिल
तो राह में आराम कैसा।
अर्जुन सा निशाना रख।
मन में ना कोई बहाना रख।
लक्ष्य सामने है बस उसी
अपना ठिकाना रख।
सोच मत, साकार कर
अपने कर्मो, से प्यार कर।
मिलेगा तेरी हर मेहनत का फल
किसी और का ना इंतजार कर।

Thank you

Aliza Rafiq
9th

My father is my God,
My mother is my Goddess,
My teacher's are my angles, and
I am a queen.

Thank you father for
become my God,
Thank you mother for
become my Goddess,
Thank you teacher for
become my angles.
I am queen because
all are with me!

Thank you teachers
for teaching me,
Thank you father
for my respect,
Thank you mother
to giving me birth
Thank you all
for every things to give me.

वार्षिकोत्सव समारोह 2023

मुख्य अतिथि
माननीय न्यायमूर्ति श्री सूर्य प्रकाश केसरवानी
द्वारा मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद

मुख्य अतिथि
माननीय न्यायमूर्ति श्री रोहित रंजन अग्रवाल जी
मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद देते हुए

विशिष्ट अतिथि
डॉक्टर अनूप कुमार ठक्कड़ जी
कार्यक्रम में संबोधन
देते हुए

मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं
अग्रवाल जातीय शिक्षा परिषद
के सम्मानित पदाधिकारियों द्वारा
विद्यालय की पत्रिका 'भारती '
का विमोचन

वार्षिकोत्सव समारोह 2023

वार्षिकोत्सव समारोह में मुख्य अतिथि
माननीय न्यायमूर्ति श्री रोहित रंजन अग्रवाल जी
के साथ अग्रवाल जातीय शिक्षा परिषद् एवं
प्रबंध समिति के सम्मानित पदाधिकारी गण

वार्षिकोत्सव समारोह के अवसर पर मंचासीन
मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि
अग्रवाल जातीय शिक्षा परिषद् एवं
प्रबंध समिति के सम्मानित पदाधिकारी गण

वार्षिकोत्सव समारोह के अवसर पर मंचासीन
सम्मानित अतिथि, पदाधिकारी गण
एवं सम्मुख उपस्थित छात्र-छात्राएं

वार्षिकोत्सव समारोह में
उपस्थित छात्र-छात्राएं

वार्षिकोत्सव समारोह 2023

वार्षिकोत्सव समारोह में स्वागत गीत
प्रस्तुत करती हुई विद्यालय की छात्राएं

वार्षिकोत्सव समारोह में लोकनृत्य
प्रस्तुत करती विद्यालय की छात्राएं

वार्षिकोत्सव समारोह में हाई स्कूल
एवं इण्टरमीडिएट में प्रथम स्थान
प्राप्त पुरस्कृत छात्र-छात्राएं

विद्यालय प्रांगण

शिक्षक दिवस समारोह 2023

मुख्य अतिथि द्वारा विद्यालय की प्रधानाचार्य डॉ0 मंजू सिंह को सम्मान पत्र भेंट करते हुए, साथ में प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल जी

अग्रवाल जातीय शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रोफेसर (डॉ0) पीयूष रंजन अग्रवाल जी मार्ग दर्शन एवं आशीर्वचन देते हुए

प्रबंध समिति के कोषाध्यक्ष श्री विजय कृष्ण जी आशीर्वाद देते हुए

अग्रवाल जातीय शिक्षा परिषद के मंत्री श्री राजेश अग्रवाल जी द्वारा संबोधन

डॉ0 अनन्त कुमार गुप्त मंच का संचालन करते हुए

आर्थिक समृद्धि तथा सामाजिक न्याय

अनिल कुमार

प्रवक्ता (वाणिज्य)

सामाजिक न्याय की आदर्श स्थिति प्राप्त करने हेतु न केवल आर्थिक समृद्धि आवश्यक है बल्कि उस समृद्धि का समता व न्याय आधारित वितरण भी अनिवार्य है। इस प्रकार सामाजिक न्याय की एक स्वीकार्य स्थिति प्राप्त करने के लिये पहले कुछ मूलभूत संसाधन सृजित व एकत्रित करने की भी आवश्यकता होगी। यहीं से किसी भी देश के लिये आर्थिक मोर्चे पर आगे बढ़ने और अपनी स्थिति मजबूत कर लेने की एक बड़ी प्रेरणा उत्पन्न होती है। यदि समाज के वंचित वर्गों तक संसाधनों व आर्थिक लाभों की पहुँच सुनिश्चित करनी है तो सबसे पहले देश में पूँजी निर्माण के माध्यम से इन वर्गों के लिये अवसर सृजित करने होंगे। जब तक किसी अर्थव्यवस्था में एक उन्नत रोजगार बाजार न मौजूद हो तब तक वंचित वर्गों के युवाओं को विकास की कतार में आगे नहीं लाया जा सकेगा। इस प्रकार अर्थव्यवस्था की उन्नति न होने पर किसी भी देश का अवसंरचनात्मक निवेश (आवासन, विद्युत ,पेयजल इत्यादि सुविधाओं में निवेश) कम हो जाता है और ऐसी स्थिति में सरकारें दिव्यांगों, वृद्धजनों इत्यादि को समुचित रूप से बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने में असमर्थ रहती हैं। इसके अतिरिक्त अर्थव्यवस्था में समग्र उन्नति के अभाव में सामाजिक क्षेत्र के सभी आयामों में निवेश कम रहता है। जिससे सामाजिक पूंजी का निर्माण नहीं हो पाता और सामाजिक न्याय का आदर्श व्यवहार से और दूर हो जाता है। इसी का एक पक्ष यह भी है कि आर्थिक समृद्धि से वंचित देश केवल अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के ही प्रयत्न करते रह जाते है और नवाचार तथा वैज्ञानिक मनोवृत्ति को बढ़ावा देने की दशा में वहाँ बहुत उन्नति नहीं हो पाती। ऐसी स्थिति में वहाँ के वैज्ञानिक या उद्यमी मनोवृत्ति वाले नागरिक देश छोड़कर चले जाने व किसी विकसित देश में अपने विचारों को मूर्त रूप देने का निर्णय लेते है, अतः वहाँ आर्थिक समृद्धि व सामाजिक न्याय दोनों की स्थिति निम्न ही बनी रहती है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सामाजिक न्याय के सपने को साकार कर पाना अर्थव्यवस्था के निरंतर समृद्धि की ओर बढ़ते रहने पर ही संभव है।

अर्थव्यवस्था की प्रगति किसी भी देश में विकास की गति व त्वरण निर्धारित करने के लिये अनिवार्य है लेकिन जब तक उस विकास का उपयोग सभी लोगों की सेवा करने, उनके सहायक की भूमिका अदा करने, उनकी समस्याओं का समाधान खोजने तथा उनकी अभिलाषाओं को प्रबंधित करने में नहीं होगा तब तक इससे मिलने वाले लाभ अनुपयोगी ही नजर आएंगें। दूसरी ओर, यह भी सत्य है कि यदि आर्थिक विकास उच्च स्थिति में न रहा तो सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिये आवश्यक संसाधन ही नहीं जुटाए जा सकेंगे। चूंकि 'आर्थिक समृद्धि' और 'सामाजिक-न्याय' अविच्छिन्न रूप से एक-दूसरे से जुड़े है ऐसे में एक की अनुपस्थिति में अन्य की कल्पना निराधार ही है। इसलिये आदर्श स्थिति में दोनों ही पक्षों के मध्य संतुलन साधा जाना अनिवार्य होगा और इसका झुकाव सामाजिक न्याय के मूल्यों की तरफ होना चाहिये, क्योंकि आर्थिक समृद्धि की अनुपस्थिति में सामाजिक न्याय की संरचना में दरारें होंगी परन्तु सामाजिक न्याय की अनुपस्थिति में आर्थिक समृद्धि का ताना-बाना बिखरकर ही रह जाएगा।

एडम स्मिथ

- एक व्यक्ति किसी संसाधन, जैसे –जमीन या श्रमिक का निवेश इसलिये करता है ताकि उसे बदले में ज्यादा-से-ज्यादा लाभ मिले। परिणामतः संसाधन का सभी तरह से इस्तेमाल समान लाभ (हर एक में मौजूद तुलनात्मक

जोखिम के लिहाज से समायोजित) मिलना चाहिये वरना स्थानातंरण देखने को मिलेगा।

- एक अच्छे विदेशी बाजार को बेहतरी, कुछ समय के लिये कुछ समान विशेष के लिये ज्यादा कीमत चुकाने की अस्थायी असुविधा की क्षतिपूर्ति कर देगी।
- पूर्णतः स्वार्थी व्यक्ति की संकल्पना भला कैसे की जा सकती है। प्रकृति के निश्चित ही कुछ ऐसे सिद्धांत हैं जो उसको दूसरों के हितों से जोड़कर उनकी खुशियों को उसके लिये अनिवार्य बना देते हैं, जिससे उसे उन्हें सुखी-संपन्न देखने के अतिरिक्त और कुछ भी प्राप्त नहीं होता है।
- किसी वस्तु को यदि कोई देश हमारे देश में आई उत्पादन लागत से सस्ती देने को तैयार है तो यह हमारा कर्त्तव्य है कि उसको वहीं से खरीदें तथा अपने देश के श्रम एवं संसाधनों का नियोजन इस प्रकार करें कि वह अधिकाधिक कारगर हो सके तथा हम उसका उपयुक्त लाभ उठा सकें।

समय प्रबंधन/अनुशासन

- काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
  पल में परलय होएगी, बहुरि करोगे कब ।। - कबीर
- समय सबसे कम पाया जाने वाला संसाधन है, और जब तक इसका अच्छा प्रबंधन नहीं किया जाता है, तो बाकी किसी चीज का प्रबंधन नहीं किया जा सकता है। - पीटर ड्रकर
- समय धन से अधिक मूल्यवान है। आप अधिक धन तो पा सकते हैं लेकिन अधिक समय कभी नहीं पा सकते। - जिम रॉन
- मैने समय को बर्बाद किया और अब समय मुझे बर्बाद कर रहा है। - शेक्सपियर
- अमीर लोग समय में निवेश करते है, गरीब लोग धन में निवेश करते हैं। - वॉरेन बफेट
- जीवन में मेरे पंसदीदा चीजों में कोई खास खर्च नहीं है। यह वास्तव में बिल्कुल स्पष्ट है कि सबसे कीमती संसाधन जो हमारे पास है वह है समय। - स्टीव जॉब्स
- बुरी खबर यह है कि समय उड़ता है, अच्छी खबर यह है कि आप उसके पायलट हैं। - माइकल आल्शुलर
- समय धन से अधिक मूल्यवान है। आप अधिक धन तो पा सकते हैं लेकिन अधिक समय कभी नहीं पा सकते। -जिम रॉन
- अनुशासन ही उद्देश्य और उपलब्धि के बीच का सेतु है। - जिम रॉन
- प्राथमिकताओं को समझना ही वास्तविक नेतृत्व है और उसका अनुकरण करना अर्थात् अनुशासन ही वास्तविक प्रबंधन है। - स्टेफेन कोवी
- अपनी इच्छाओं पर अनुशासन ही आपके चरित्र का आधार है। - जॉन लॉक
- अनुशासन विपत्ति की पाठशाला में सीखा जाता है। -महात्मा गाँधी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का भविष्य और चुनौतियाँ

विनोद कुमार
स0 अध्यापक (विज्ञान)

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ सीखने एवं सिखाने की क्रिया जिसके द्वारा बालक की आन्तरिक शक्तियों का विकास तथा व्यवहार को परिष्कृत किया जाता है। शिक्षा द्वारा ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि कर मनुष्य को योग्य नागरिक बनाया जाता है।

इसरों के पूर्व प्रमुख **डॉ. के कस्तूरीरंगन** की अध्यक्षता में गठित समिति ने शिक्षा क्षेत्र में सुधारों से सम्बन्धित **राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020**, की घोषणा की जिसे भारत सरकार ने मंजूरी दी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, वर्ष 1968 और वर्ष 1986 के बाद स्वतंत्र भारत की तीसरी शिक्षा नीति है। इसमें 1986 के 10+2 के शैक्षिक मॉडल के स्थान पर 5+3+3+4 के शैक्षिक मॉडल को अपनाया गया है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदल कर **शिक्षा मंत्रालय** कर दिया गया है।

- प्रथम चरण के 5 वर्ष को फाउण्डेशन स्टेज कहा गया जिसमें 3 वर्ष से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए शैक्षिक पाठ्यक्रम 2 समूहों में विभाजन किया गया है – 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए ऑगनबाड़ी, बालवाटिका, किन्डर गार्टन आदि प्री-स्कूल के माध्यम से Early Childhood Care & Education की उपलब्धता सुनिश्चित करना एवं 6 से 8 वर्ष तक के बच्चों को प्राथमिक स्कूलों में कक्षा 1 और कक्षा 2 में ग्रेडिंग प्रणाली से बिना परीक्षा के ग्रेड दिया जायेगा। शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषा होगा।
- द्वितीय चरण के 3 वर्ष को **प्रीपेटरी स्टेज** जिसमें कक्षा 3 से कक्षा 5 शामिल (आयु 8 वर्ष से 11 वर्ष) है जिसमें बालक को बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान की शिक्षा दी जायेगी। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा/स्थानीय/क्षेत्रीय भाषा होगा।
- तृतीय चरण के तीन वर्ष को **मध्य (या उच्च प्राथमिक चरण)** जिसमें कक्षा 6 से कक्षा 8 तक (आयु 11 वर्ष से 14 वर्ष) इसमें कक्षा 6 से ही शैक्षिक पाठ्यक्रम में इण्टर्नशिप के साथ व्यावसायिक शिक्षा की शुरुआत की जायेगी अर्थात बालक रूचि के अनुसार कम्प्यूटर कोडिंग, सिलाई-कढ़ाई, बागवानी, कार्पेन्ट्री, योग, नृत्य, मार्शल आर्ट आदि भी कर सकेगा। बच्चे कम से कम एक भारतीय भाषा का भी अध्ययन करेगें।
- चतुर्थ चरण के ''चार वर्ष'' को **उच्च (या माध्यमिक)** चरण जिसमें कक्षा 9 से 12 तक (आयु 14 वर्ष से 18 वर्ष तक) शामिल हैं इसमें छात्रों के समग्र विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखकर कक्षा-10 और कक्षा-12 की परीक्षाओं में बदलाव किये जायेगें इसमें **No Stream, Multiple Subject, Critical Thinking** आदि जैसे सुधारों के साथ सेमेस्टर प्रणाली को लागू किया जायेगा। कम से कम एक विदेशी भाषा को भी सीखेगा लेकिन यह छात्रों के लिए बाध्यकारी नहीं है। छात्रों की प्रगति के मूल्यांकन के लिए मानक निर्धारित निकाय के रूप में ''**परख**'' **(PARAKH)** नामक नये ''**राष्ट्रीय आकलन केन्द्र**'' की स्थापना की जायेगी तथा छात्रों को अपने भविष्य से जुड़े निर्णय लेने में सहायता प्रदान के लिए

आर्टिफिशियल इन्टेलीजेन्स आधारित सॉफ्टवेयर- चैट जीपीटी बिग, एलेक्सा, एस.आर.जी. आदि ऐपों प्रयोग कर सकेंगे इसमें छात्रों के रटने के बजाय मुख्य तार्किक दक्षताओं पर जोर दिया जायेगा।

इस प्रकार 5 + 3 + 3 + 4 शैक्षिक प्रणाली कक्षा 12 तक ही समाप्त हो रही है लेकिन इसका प्रारम्भ 3 वर्ष से शुरू हो रहा है। आर्टिफिशियल इन्टेलीजेन्स की भूमिका प्रमुख है जबकि पुरानी 10+2 शैक्षिक प्रणाली 6 वर्ष से प्रारम्भ होती थी।

पहले स्नातक स्तर 3 वर्ष का होता था अब यह 4 वर्ष कर दिया गया है अब राष्ट्रीय शैक्षिक नीति-2020 में विद्यार्थी कई स्तरों पर पाठ्यक्रम को कर सकेगें और उन्हें उसी के अनुरूप डिग्री या प्रमाणपत्र प्रदान किया जायेगा। जैसे-

01 वर्ष के अध्ययन के बाद - **ग्रेजुएट सर्टिफिकेट**

02 वर्ष के अध्ययन के बाद – **एडवांस डिप्लोमा**

03 वर्ष के अध्ययन के बाद - **ग्रेजुएट डिग्री**

04 वर्ष के अध्ययन के बाद - **ग्रेजुएट रिसर्च**

''**ग्रेजुएट डिग्री**'' प्राप्त करने वाले छात्र ही नौकरी/कम्पटीशन के लिए पात्र माने जायेगें। इस व्यवस्था में Re-Entry की व्यवस्था है अर्थात छात्र जहाँ से पढ़ाई छोड़ेगें वहीं से आगे की पढ़ाई कर सकेंगे।

''**परास्नातक**'' की पढ़ाई एक वर्ष या दो वर्ष का होगा। इस प्रकार पुराने तथा नये शैक्षिक मॉडल में परास्नातक करने में 5 वर्ष ही लगेगा। इसमें **एम.फिल.** को समाप्त कर दिया गया है तथा **पी.एच.डी.** का कोर्स अब भी 4 वर्ष का रहेगा।

उपरोक्त कोर्स के पाठ्यक्रम क्या रहेंगे शिक्षा मंत्रालय के विशेषज्ञों द्वारा तय किये जायेंगे। चिकित्सा एवं कानूनी शिक्षा को छोड़कर पूरे उच्च शिक्षा के क्षेत्र के लिए एकल निकाय के रूप में **Higher Education Commission of India (H.E.C.I.)** का गठन किया जायेगा। देश में I.I.T., तथा I.I.M. के समकक्ष वैश्विक मानकों के ''**बहुविषयक शिक्षा एवं अनुसंधान विश्वविधालय**'' की स्थापना की जायेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सकारात्मक और नकारात्मक बिन्दु :

1. केन्द्र व राज्य सरकार के सहयोग से शिक्षा क्षेत्र पर देश की सकल घरेलू उत्पाद के 6 प्रतिशत हिस्से के बराबर निवेश का लक्ष्य रखा गया है जो वर्तमान में 3 प्रतिशत से लगभग दो गुना है इससे शिक्षा व्यवस्था बेहतर होगी।
2. छात्रों के पाठ्यक्रम में तार्किक चिन्तन, योग्य कौशल आदि वाले विषयों को शामिल किया जायेगा।
3. छात्रों के याद करने की प्रवृत्ति के स्थान पर तार्किक विश्लेषण को बढ़ावा दिया जायेगा।
4. ''**प्रदर्शन ग्रेडिंग इण्डेक्स-2**'' के आधार पर निजी स्कूलों की फीस का निर्धारण हो सकेगा।
5. वोकेशनल कोर्स के तहत छात्रों को व्यवहारिक ज्ञान हो सकेगा।
6. विद्यार्थी व्यावहारिक ज्ञान के द्वारा स्वयं अपना मूल्यांकन कर अंक सुधार कर सकेगे जिसमें वे आर्टिफिशियल इन्टेलीजेनस का सहयोग ले सकेंगे।
7. विश्व के टाप-50 ग्रेड के विश्वविद्यालय भारत में अपने विश्वविद्यालय खोल सकेंगे।
8. स्नातक शिक्षा में आर्टिफिशियल इन्टेलीजेन्स, मशीन लर्निंग, डेटा विश्लेषण आदि क्षेत्रों के समावेशन होने से छात्रों को रोजगार सृजन के अतिरिक्त अवसर उपलब्ध होंग।
9. **H.E.C.I.** के द्वारा 4 डिपार्टमेन्ट बनाये जायेगे जिसमे **एक** पाठ्यक्रम तैयार करेगा, **दूसरा** योग्य शिक्षकों का चुनाव करेगा, **तीसरा** वेतन आदि की व्यवस्था करेगा, **चतुर्थ** परिणाम तैयार करेगा।

10. वित्त पोषण के लिए Higher Education Grant Commission (H.E.G.C.) की स्थापना की जायेगीं।
विचारों के मुक्त आदान-प्रदान के लिए नेशनल एजुकेशन टेक्नोलॉजी फोरम का निर्माण किया जायेगा।

जहाँ तक नकारात्मक बिन्दु की दृष्टि से यह नीति **संघात्मक व्यवस्था** का पोषण करती है जबकि शिक्षा समवर्ती सूची का विषय है जिससे राज्यों में विभेद उत्पन्न होगा। यह नीति अध्यापकों के ग्रेडिंग की व्यवस्था में छात्रों की भूमिका का स्पष्ट उल्लेख नहीं करती है।

निष्कर्षत : राष्ट्रीय शैक्षिक नीति-2020 का क्रियान्वयन यदि सफल तरीके से होता है तो भारत विश्व के अग्रणी देशों के समकक्ष होगा तथा वर्ष 2047 से पूर्व ही **विकसित राष्ट्र** बन जायेगा।

नारी सशक्तिकरण

प्रगति पाठक
XII CG

आज के आधुनिक समय में नारी सशक्तिकरण एक विशेष चर्चा का विषय है। हमारे आदि ग्रंथों में नारी के महत्व को मानते हुए यहाँ तक यह भी बताया गया है कि ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।

लेकिन नारी में इतनी शक्ति होने के बावजूद भी उसके सशक्तिकरण की अत्यंत आवश्यकता महसूस हो रही है। महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का अर्थ उनके आर्थिक फैसलों आय संपत्ति और दूसरे वस्तुओं की उपलब्धता से है। इन सुविधाओं को पाकर ही वह अपने सामाजिक स्तर को ऊंचा कर सकती है।

अपने देश में उच्च स्तर की लैंगिक असमानता है। नारी सशक्तिकरण का अर्थ तब समझ में आयेगा जब भारत में उन्हें अच्छी शिक्षा दी जाएगी और उन्हें इस काबिल बनाया जाएगा कि वो हर क्षेत्र में स्वतंत्र होकर फैसले कर सकें।

महिला अधिकार और समानता का अवसर पाने में नारी सशक्तिकरण ही अहम भूमिका निभा सकती है। क्योंकि नारी सशक्तिकरण महिलाओं को सिर्फ गुजारे-भत्ते के लिए ही तैयार नहीं करती, बल्कि उन्हें अपने अंदर नारी चेतना को जगाने और सामाजिक अत्याचारों से मुक्ति पाने का माहौल भी तैयार करती है।

आज देश में नारी शक्ति की सभी दृष्टि, से सशक्त बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसका परिणाम भी देखने को मिल रहा है। आज देश की महिलाएं जागरूक हो चुकी हैं। आज की महिला ने उस सोच को बदल दिया है कि वह घर और परिवार की ही जिम्मेदारी को बेहतर निभा सकती है। आज की महिला पुरुषों के साथ कंधे से कन्धा मिला कर बड़े से बड़े कार्य क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। फिर चाहे काम मजदूरी का हो या आन्तरिक्ष में जाने का। महिलाएं अपनी योग्यता हर क्षेत्र में साबित कर रही हैं।

महिला एवं बाल विकास कल्याण मंत्रालय और भारत सरकार द्वारा भारतीय नारियों के सशक्तिकरण के लिए निम्नलिखित योजनाएं- बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना, महिला हेल्प लाइन योजना, उज्जवला योजना, महिला शक्ति केन्द्र योजना आदि।

भारतीय चित्रकला की अनुपम धरोहर
अजन्ता की चित्रकला

श्रीमती कौशिकी अग्रहरि
सहायक अध्यापिका

सुन्दर रूप और कला की मृदु मुस्कान, करुणा और शान्ति के आँचल से आवृत अजन्ता की कलाकृतियाँ अपने अवगुन्ठन में न जाने कितनी सरस भावनाओं और कलाकारों की अन्तर-अनुभूतियों की उपलब्धियाँ छिपाए अपने अस्तित्व से प्राचीन भारतीय कला-इतिहास को स्वर्ण पृष्ठिका लगाये हुए अपने मूक रूपों से चिरशान्ति और अमरत्व का संदेश दे रही हैं।

अजन्ता महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित है। अजन्ता के तीस गुहा मन्दिर पहाड़ियों को काट कर बनाए गये हैं। इन गुहा मन्दिरों की खोज 1819 में हुई। इन गुहा मन्दिरों की दीवारों एवं छतों पर अनेक चित्र चित्रित हैं। गुफाओं के अधिकांश चित्र महात्मा बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित जातक कथाओं पर आधारित हैं। इन गुफाओं में 547 जातक कथाओं का चित्रण है। इसके अलावा कुछ अलंकारिक चित्र भी बनाए गए है इनमें विविध आलेखन जैसे फूल, पत्तियाँ, पुष्पों की बेलें, कमल दल, लताएं, वृक्ष, पशु-पक्षी, अलौकिक पशु, राक्षस, किन्नर, नाग, गरुण, यक्ष, गन्धर्व व अप्सरा के चित्र हैं।

यूँ तो अजन्ता के सभी चित्र एक से बढ़कर एक हैं तथापि वर्ण, विषय और भाव प्रदर्शन की दृष्टि से कुछ चित्र विश्व प्रसिद्ध हैं।

जिनमें बोधिसत्व पद्मपाणि (अवलोकितेश्वर) बोधिसत्व वज्रपाणि, मारविजय, 'मरणासन्न राजकुमारी', राहुल समर्पण और अनेक जातक कथाओं के चित्र जैसे महाहंस जातक, महाकवि जातक, हस्ति जातक, शिवि जातक, चंपे जातक आदि, जातक कथाओं का अन्यत्र एक ही स्थान पर इतनी बड़ी संख्या में अंकन दुर्लभ है। अजन्ता गुहा मन्दिरों की दीवारों पर 'फ्रेस्को' तथा 'टेम्परा' दोनों विधि से रंग लगाए गए हैं फ्रेस्को का अर्थ है गीली दीवार पर चित्रण करना। इन सभी चित्रों में प्राकृतिक रंग लगाए गए हैं, जिनकी चमक आज भी यथावत् है।

अजन्ता में जिन चित्रकारों ने चित्रकारी की है वे सृजन के शिखर पुरुष थे। अजंता की दीवारों पर जो खड़ी लाइने कूँची से सहज ही खींची गई है वे अचंभित करती हैं परन्तु जब छत की सतह पर संवारी क्षैतिज के समांतर लकीरें उनमें संगत घुमाव मेहराब की शक्ल में एकरूपता के दर्शन होते है तब लगता है वास्तव में यह विस्मय-कारी आश्चर्य और कोई चमत्कार है।

यूनेस्को द्वारा 1983 से विश्व विरासत स्थल घोषित किये जाने के बाद अजंता के चित्र बौद्ध धार्मिक कला के उत्कृष्ट नमूने माने गए हैं, इनका भारत की कला के विकास पर गहरा प्रभाव है।

पाश्चात्य देशों में भारतीय चित्रकला का अपना न्यायोचित स्थान दिलाने में अजन्ता के चित्रों का प्रमुख स्थान रहा है।

मोबाइल की दुनिया

श्याम शंकर

प्रवक्ता (भौतिक विज्ञान)

आज के समय में सबसे बड़ी त्रासदी की बात की जाय तो वह मोबाइल है आज इस बात का दुख नहीं है कि बच्चा घर से बाहर नहीं जाता, दुख इस बात का है कि सबसे ज्यादा समय मोबाइल पर दे रहा है। विद्यार्थी जीवन साधना और तपस्या का जीवन है। यह काल एकाग्रचित होकर अध्यन तथा ज्ञान चिंतन का है। यह समय सांसारिक भटकाव से स्वयं को दूर रखने का है। जिससे कि अच्छा भविष्य तथा चरित्र निर्माण हो सके।

मोबाइल जिसका भी आविष्कार है उसका बड़ा सम्मान है। इसके अनेक फायदे हैं परन्तु इसके भीतर के कुछ आविष्कारों ने हमें भोगी बनाने के साथ-साथ मनोरोगी बना दिया है। इसका आवश्यकता से अधिक उपयोग जीवन के लिये अभिशाप है। खासकर जब बच्चों की बात की जाय तो मोबाइल की बुरी लत पड़ने से उन पर दूरगामी दुष्प्रभाव पड़ रहा है। मोबाइल की दुनिया ने बच्चों का बुरा हाल कर दिया है।

पहले बच्चा घर से बाहर जाता था तो माता-पिता को बहुत घबराहट होती थी घड़ी पर नजर रहती थी। घर पर समय से नहीं आने पर पड़ोस में पूछने चले जाते थे। लेकिन अब लाचार है, बेबश हैं, कोई बस नहीं चल रहा है। मोबाइल उनके आँखों के सामने बच्चे को निगल रहा है अभी बच्चे ने बचपन ठीक से देखा भी नहीं कि मोाबइल की दुनिया ने उसे युवान कर दिया है।

विद्यार्थियों को गुरू से ज्यादा गूगल पर भरोसा है। इस रंग बदलती दुनिया ने बच्चों को ही नहीं पूरा मानव समाज की व्यवस्था को बदल के रख दिया है इसने हमारा सुकून और संस्कार छीना है। इसने घूघँट और एक साथ बैठकर बतलाने वाला घर परिवार छीना है। इसने नई किताब की सुगन्ध तथा निमंत्रण पत्र पर हल्दी की गन्ध छीना है। इसने जीवन जीने का आधार अर्थात उत्सुकता को प्रभावित किया है।

रामलीला आनलाइन हो रही है, कला और संस्कृति एक साथ रो रही है, रिश्ते संवाद से नहीं चैट से जिंदा है, हम फेसबुक के कैदी और ट्विटर के परिंदा होते जा रहे है। इस बदलती दुनिया के रंग में क्या ऐसा भी हो सकता है कि वीडियों काल पर हम, एक दूसरे के आँसू पोछ सकें। किसी के खुशी में बड़ों का पैर छूना, गले से लगाना, बड़ों का सर पर हाथ फेरना, पीठ थपथपाना आदि संस्कार का क्या वीडियो काल पर सम्भव है जिसका जवाब सौ प्रतिशत नहीं होगा।

यह जो सोशल मीडिया है इसने आपसे अभी बहुत कुछ छीना है। अगर आप चाहते हैं कि अभी भी कुछ बचाना तो इसके अत्यधिक उपयोग से दूरी बनाइये वर्ना अपने जीवन के जज्बात खो बैठेंगें, हरे भरे अहसास खो बैठेंगें।

अब ये निर्णय आपका है आपको कैसे रहना है, कैसे जीना है। हम आप से यही निवेदन करेगें कि-

मोबाइल की दुनिया ने आपसे क्या-क्या छीना।

अपने हौसले को बुलन्द करना सीखिए।

मोबाइल चलाना तो सीख लिया है।

थोड़ी देर बन्द करना सीखिए।

पौष्टिक भोजन और जंक फूड

श्रीमती रूबी अग्रवाल

सहायक अध्यापिका

हम मौजूदा हालात पर नजर डालें तो हम देख सकते हैं कि फास्ट फूड का बाजार कितनी तेजी से बढ़ रहा है। खाद्य वितरण और अधिक की शुरुआत के साथ लोग अब जंक फूड अधिक पसंद करते हैं साथ ही जंक फूड अधिक स्वादिष्ट बनाने में आसान होता है।

हालांकि हम सिर्फ अपने जुनून और इच्छाओं को पूरा करने के लिए अपने स्वास्थ्य को खतरे में डाल रहे है। जंक फूड खाने के बाद भले ही आपका पेट भरा हुआ महसूस हो, लेकिन यह आपके शरीर को काफी नुकसान पहुंचाता है। जंक फूड में फाइबर की कमी के कारण पाचन सम्बन्धी समस्याएं भी होती है जिससे अपच की समस्या होती है।

जंक फूड ब्लड शुगर की अनियमितता का कारण बनता है क्योंकि इसमें कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन की मात्रा कम होती है साथ ही जंक फूड कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड के स्तर को बढ़ाता है।

दूसरी ओर पौष्टिक आहार पौष्टिक होते है यह न केवल आपके शरीर को बल्कि आपके दिमाग को भी स्वस्थ रखता है। आपके मस्तिष्क की कार्यक्षमता को बढ़ाता है। साथ ही आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाता है।

संक्षेप में, हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि जंक फूड देखने में अटपटा लग सकता है लेकिन इसकी कीमत बहुत अधिक होती है इसलिए हम सभी को स्वस्थ आहार खाना चाहिए और एक लंबा और स्वस्थ जीवन जीने की कोशिश करनी चाहिए।

हम सभी को जंक फूड से बचना चाहिए और संतुलित आहार को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना चाहिए, सन्तुलित आहार हमें मजबूत बनाता है और हमें बीमारियों से लड़ने की क्षमता देता है हमें अपने दैनिक आहार में पौष्टिक भोजन का ध्यान रखना चाहिए, संतुलित आहार हमें शारीरिक और मानसिक रूप से सन्तुलित रखता है।

चुटकुला

परी चौरसिया
VIII

बालू - क्या तू इंग्लिश समझ सकता है।
लालू - जरूर, अगर हिन्दी में बोली जाए तो।
मोनू - मुर्गियाँ अंडों पर क्यों बैठती है?
सोनू - क्योंकि उनके पास कुर्सियाँ नहीं होती।
शिक्षक - राघव, तुम्हारे पापा की उम्र क्या है?
राघव - जितनी मेरी उम्र है।
शिक्षक - यह कैसे हो सकता है?
राघव -क्योंकि मेरे जन्म के बाद ही तो वे पापा बने।

मेरा विद्यालय

अंकिता तिवारी
XII AG

इलाहाबाद इण्टर कालेज है मेरा विद्यालय
यह विद्यालय है सबसे न्यारा
हमको प्राणों से है प्यारा।
इलाहाबाद इण्टर कॉलेज है इसका नाम
शिक्षा देना है इसका काम।
प्राचार्य यहाँ की हमारी जान
करते हैं सब उनका सम्मान
इलाहाबाद इण्टर कॉलेज के हैं हम फूल,
दूर करें समाज के घर शूल
सब शिक्षक है यहाँ के ज्ञानी
और मधुर है उनकी वाणी।
बच्चें यहाँ के समय से आवें,
शिक्षा में सब ध्यान लगावें।
हर कार्यक्रम यहाँ है होते
बच्चे बढ़-चढ़ भाग भी लेते।
पुरस्कार वे जीत के लाते,
विद्यालय का सम्मान बढ़ाते।
बच्चों का बस एक ही नारा।
इलाहाबाद इण्टर कॉलेज है हमें प्राणों से प्यारा।

बेटी की विदाई

आरती शर्मा
XI AG

1. कन्यादान हुआ जब पूरा, आया समय विदाई का।।
   हँसी खुशी सब काम हुआ था, सारी रस्म अदाई का।
2. बेटी के उस कातर स्वर ने, बाबुल को झकझोर दिया।।
   पूछ रही थी पापा तुमने, क्या सचमुच में छोड़ दिया।।
3. अपने आँगन की फुलवारी, मुझको सदा कहा तुमने।।
   मेरे रोने को पल भर भी, बिल्कुल नहीं सहा तुमने।
4. क्या इस आँगन के कोने में, मेरा कुछ स्थान नहीं
   अब मेरे रोने का पापा, तुमको बिल्कुल ध्यान नहीं।।
5. देखो अन्तिम बार देहरी, लोग मुझे पूजवाते हैं
   आकर के पापा क्यों इनको, आप नहीं धमकाते हैं
6. नहीं रोकते चाचा ताऊ, भैया से भी आस नहीं
   ऐसी भी क्या निष्ठुरता है, कोई आता पास नहीं।।
7. बेटी की बातों को सुन के, पिता नही रह सका खड़ा।
   उमड़ पड़े आँखों से आँसू, बदहवास सा दौड़ पड़ा।।
8. कातर बछिया सी वह बेटी, लिपट पिता से रोती थी
   जैसे यादों के अक्षर वह, अश्रु बिंदु से धोती थी।।
9. माँ को लगा गोद से कोई मानों सब कुछ छीन चला।
   फूल सभी घर की फुलवारी से कोई ज्यो बीन चला।।
10. छोटा भाई भी कोने में, बैठा बैठा सुबक रहा।
    उसको कौन करेगा चुप अब, वह कोने में दुबक रहा।।
11. बेटी के जाने पर घर ने, जाने क्या क्या खोया है।
    कभी न रोने वाला बाप, फूट फूट कर रोया है।

Water Pollution

Mahesh Kumar Srivastava
Chemistry Lecturer

The main water pollutants include bacteria, viruses parasites, fertilisers, pesticides, pharmaceutical products, nitrates, phosphates, plastic, faecal waste and even radioactives substances. These substances do not always change the colour of water, meaning that they are often invisible pollutants.

Agricultural pollution is the top source of contamination in rivers and streams, the second biggest source in wetlands, and the third main source in lakes. It is also a major contributor of contamination of estuaries and groundwater. Every time it rains, fertilizers, pesticides and animal waste from farms and livestock operation was nutrients and pathogens – such as bacteria and viruses into our water ways.

Nutrient pollution caused by excess nitrogen and phosphrous in water or air, is the number one treat to water quality worldwide and can cause algal blooms, a toxic soup of blue-green algae that can be harmful to people and wildlife.

In the United States, wastewater treatment facilities process about 34 billion gallons of waste water per day, these facilities reduce the amount of pollutants as pathogens, phosphorous and Nitrogen in sewage, as well as heavy metals and toxic chemicals in industrial waste, before discharging the treated water back into water ways. Big spills may dominate headlines, but consumers account for the vast majority of oil pollution in our seas, including oil and gasoline that drops from millions of cars and trucks every day.

Radioactive waste is a pollution that emits radiation beyond what is naturally released by the environment. It's generated by uranium mining, nuclear power plants, and the production and testing of military weapons, as well as by universities and hospitals that use radioactive materials for research and medicine.

Covering about 70 percent of the earth, surface water is what fills our oceans, lakes, rivers, and all those other blue bits on the world map. Surface water from freshwater sources accounts for more than 60 percent of the water delivered to American houses. But a significant pool of that water is in peril. Diseases spread by unsafe water include cholera, giardia and typhoid. Even in wealthy nations, accidental or illegal release from sewage treatment facilities, as well as runoff from farms and urban areas, contribute harmful pathogens to water ways.

We're all accountable to some degree for today's water pollution problem, Fortunately, there are some simple ways you can prevent contamination or atleast limit your contribution to it.

Reduce your plastic consumption and reuse or recycle plastics when you can.

Maintain your car so it does not leak oil, antifreeze, or coolent.

Properly dispose of chemical cleaners, oils, and nonbiodegradable items to keep them from going down the drain.

If you have a yard, consider landscaping that reduces runoff and avoid applying pesticides and herbicides

Do not flush your old medications! Dispose of them in the trash to prevent them from entering local waterways.

Socialisation and Integration on Biological Parameters

Sukh Ram
Lecturer (Biology)

Evolution of Earth and other planets of solar system thereby the formation of universe is a mystery. Science has solved this mystery by means of Big Bang theory. After formation of Earth how it was converted to life supporting planet and origin of life and social integration among livings are some typical question which has been explained by scientific para-meters. Here in this note I have tried to explain the socialization or integration among livings.

Before discussing the concern topic we should understand the society or community. Scientifically community is defined as a group of populations and population is defined as group of individuals of same species. In this way community is a group of livings which includes population of different species. Trend of organization among livings has been evolved due to Interdependence and Interdependence is the result of evolution of feeding habits. Now focus to main topic is evolution of Inter-relationship among human beings. Family is the unit of society. Let us try to discuss the origin of family relationship I think origin of family relationship is doubtlessly a mother. Mother-child relation propogates into a family tree. Inter family relationships are also triggered by mother-child relationship. Socialisation or Integration among us is the final product of Mother child relationship. Human being is highly evolved animal. Mother-child relationship is the base of parental care from evolution of Earth to evolution of parental care involves some key events such as oxygen revolution, physical and chemical control and coordination of body. I think Oxygen revolution is a new term for most of you this term denotes a stage in origin of life on earth proposed by Oparin, also known as Oparin's theory of evolution. According to this theory previous environment was of reducing type which promoted the formation of complex compounds from simple ones but after a long period this reducing type of environment was slowly changed to oxidizing type. Presently environment is of oxidizing type which promotes oxidative changes means it promotes simplification of complex compounds to simpler ones. In this way climate was reversed. Oxidising type of environment promoted the evolution of life rapidly. Now we should discuss the cause of parental care or control and coordination among animals. All multicellular forms need to control all cells. Tissues, organs and organ system to work simultaneously. coordination among tissue of body depends on physical control by means of nervous system which receives signals from external environmental condition, and other factors which are processed by Brain. Brain analyses the stimuli or threshold received by nerves and decides the activities to be performed. Activities to be performed are the cumulative result of cellular activity. Each and Every cell is a structural and functional unit of life. Function of cells is stimulated by number of biochemicals commonly known as hormones. Hormones are the actual causative factors of cellular activities reflected as behavior. Some harmones directly control animal behavior. Mother-child relationship is also governed by

Hormones. A mother gives birth to new generation and protects it from external calamities is, simply known as parental care. I think most of you have experience of blissful and loving phone call of your mother when you were sick while studying abroad from home or away from your mother, without any information. At that time you must have wondered that how she was informed and definitely you have felt blessed and relaxed by mother's phone call only.

This type of parental care in Human beings is the climax of parental care in which a person on Death bed wants to see his sons and daughters happily without caring of his own trouble and pain. Key behind all these events of parental care is the secretion of a unique hormone named oxitocin which help in child birth and breast feeding. Actually this Hormone works as a vasoconstrictor which stimulates the contraction of Uterine musculature and Milk lacteales of mammary gland. Contraction of Uterine musculature helps in propulsion of child which helps in part nutrition and contraction of Milk lecteales helps in oozing of milk. When a child in position of breast feeding touches the nipples or mamma of breast with his lips transmits a highly efficient nerve signals because Area around nipples of mother and that of lips has deusly distributed nerves. Neural signal initiates the process for secretion of oxitocin hormone from pituitary of mother which evolks maternal affection or motherhood in her.

Oxitocin creates an inherent relationship between mother and child which works as the base of all social relationships and integration among nations. If a mother feeds her child she creates indirect attachment with him which is reflected in the unity of family. It means child who is properly nourished with breast feeding will never leave his mother which empowers the unity of family. Unity of family leads to development of healthy society and healthy Nations. In this way each and every mother must feed milk to her child for conservation of relationships, Humanity, Nationality and thereby International integration, child-mother relationship is a matter of sixth sense which is still to be discovered.

''Everyone has a story in life don't judge too early''

Vanshika Singh
Class 11th CG

A 24 year old by seeing out from the train's window shouted….. ''Dad look the trees are going behind!'' Dad smiled and a young couple sitting nearby looked at the 24 years Old childish behaviour with pity, suddenly he again exclaimed….

''Dad look the clouds are running with us!'' The couple couldn't resist and said to the old man..

''Why don't you take your son to a good doctor?'' The old man smiled and said….

''I did and we are just coming from the hospital, my son was blind by birth, he just got his eyes today.''

Moral Every single person on the planet has a story. Don't judge people before you truly know them.

Because the truth might surprise you.

The Teacher and the Taught

Dr. Shreeram Tiwari
(Lecturer in English)

The relation between the teacher and the taught is very pure from the time immemorial, especially in India. It's purity is beyond suspicion. No bond is as pure and intimate as this one. The bond between the teacher and the taught-that is peculiar to India. The teacher is not a man who comes just to teach me and I pay him so much and there it ends. In India it is really like an adoption the teacher is more than my own father and I am truly his child, his son in every respect. I owe him obedience and reverence first, before my own father even; because , it is said, the gave me this body, but my teacher showed me the way to salvation, he is greater than father and we carry this love, this respect for our teacher all our lives.

The present system of education is all wrong. The mind is crammed with facts before it knows how to think. Control of the mind should be taught first. If I had my education to get over again and had my voice in the matter, I would learn to master my mind first and then gather facts if I wanted them. It takes people a long time to learn things because they cannot concentrate their minds at all.

I mean to say that essential powers and intellectual energies are existed in the taught. The prime duty of the teacher is to provoke them by pruning the taught like deserted slab. But a question arises whether the teacher discharges his duties to his taught. Both the teacher and the taught exist. The teacher and the school exist. But the relation between the teacher and the taught is not so as it used to be as well as the atmosphere of Gurukul. One of the main causes behind this decline is the lack of the teacher's- real feelings in the teachers and the lack of obedience and respect in the taught. Both have forgot their sacred relation with each other.

Material pump and show, westernization in daily life, deviation from human values and spirituality have become status symbol of highly educated person or society. So Indian culture, humanitarian approach, fraternity, mutual love and co-operation, virtues are disappearing in society and public life.

Today our society is suffering from moral pollution. Now it has become more dangerous and fatal than water, air and environmental pollution. Many researches are on various subjects and problems but no attention is being paid towards moral pollution, specially in our young generation. Juvenile delinquency is the result of it. Today the eradication of moral-pollution has become the pressing need of society. It is possible only through the collaboration of the teachers and the society. In such situation the role of schools, colleges and family is very imperative and important. Because these are the places where the foundation of the nation is prepared imbibing in the taught moral and cultural values.

As, the Greatness and prosperity of a nation depend on its good citizens. In this materialistic era-majority of teachers do not bear any imitative ideal for their taught even if, they have efficiency in their subjects. So their taughts lack moral-ideal and culture. Only

command over the subject is not enough for teachers. The essential qualities and dignity of a teacher are imperative in them to establish ideal for their taughts. In practical life they have become entirely professional forgetting the sacredness of their job.

On the other hand, good culture begins from cradle and school of a child. These are the two primary places where the seeds of good moral culture-are sown and reared in him. Without good moral culture no step will be effective to check corruption, a curse to society and public life. It is possible with the assistance of the teacher and parents of the taught. Dama, Dana, Daya (three Da...) constitute the essential of the good life. These are marks of human being. Today we lack these virtues so we have deterioration day by day in manhood. It is education especially-spiritual one, that can check this deterioration. So the teacher and the taught's prime duty is to endow themselves with aforesaid virtues.

Now both the teacher and taught-have lost their grace and greateness as they used to be in ancient time. Commericialization and westernization of education has ruined the sweet relation between the teacher and the taught. Today, they have to maintain that relation by maintaining required qualities in them. Only then can they regain and enjoy their lost prestige and sweetness of their relations.

Women Empowerment

Fara

XIIth S.G.

Women Empowerment is empowering the women to take their own decisions for their personal development as well as social development. Empowerment of women would mean encouraging women to be self-reliant, Independent, have positive self esteem, generate confidence to face any difficult situation and incite active participation in various socio-political development endeavour.

In the ancient time, women were treated very badly by family and society. They were not given education and were only restricted to do household tasks. They were kept completely oblivious of their rights and development. Women make up half of the country so, in order to make the country an entirely powerful country, women empowerment is very necessary. There are various ways in how one can empower women. The individuals and government both must come together to make happen. Education for girls must be made compulsory so that women can become literate to make a life for themselves.

Women must be given equal opportunities in every field, irrespective of gender. Moreover, they must also be given equal pay. We can also empower women by eliminating child marriages in India, which is commonly conducted in village areas. Various programs must be conducted where they can be given the ability to defend themselves in case they face financial crises.

Most importantly, the shame of divorce and abuse must be thrown out of the window. Many women stay in abusive relationships because of the fear of society. Parents must teach their daughters it is okay to come home divorced rather than in a coffin.

6 ways to help, develop, growth mindsets

Ajay Bahadur Singh
Lecturer (English)

"Education is the only medium by which we can modify our conduct and behaviour :"

1. **Embrace Imperfection :** This is duty of the teachers to encourage students to view their mistakes as important steps in their learning journey. Reinforce the idea that no one has ever learned something valuable without making mistakes along the way.
2. **Reframe challenges as opportunities :** Cultivating a growth mindset is about teaching children how to learn and use strategies to overcome challenges. We should explain the benefits of overcoming obstacles for people who push through comfort zones to meet challenges head on.
3. **Provide opportunities for self-Evaluation :** It is duty of teachers to take time to help students reflect on both their success and failure. We should help them to discover more about their ability to work through a problem to find a solution. Praise the process followed, student effort and individual development over the result alone. We must encourage a sense of curiosity.
4. **Try different teaching techniques :** Teacher should try to use a variety of instructional strategies tailored to meet the learning needs of all students. For content use vidio and audio clips, presentations and other mediums. Have students work individually, in pair and in small and large groups. challenge students to demonstrate their understanding of content via tests, projects and assignments.
5. **Model a growth mindset for students :** As critical role models for students, it is important for teacher to let students see their growth mindset in action. Be honest about something that is difficult for you. Tell your students where you are discouraged and discuss solutions with them. Involving students in this way helps them see the need to work through challenges to make progress.
6. **Help students change their language :** Language-both written and spoken is an excellent tool for helping students see the difference between fixed and growth mindsets. Put this to the test by having students practice phrases that promote a growth mindset ''Mistakes help you learn''. Avoid language like ''you are so smart'' or ''wrong answer''.

''Education is one thing no one can take away from you''. A proper education sets people up to grow personally, professionally and socially. It can awaken joy, curiosity and a deep desire to solve problems and help others. Teaching a student can inspire them to pursue leadership roles and positively impact those around them. One of the other many benefits of education is that it can broaden a students horizons, helping them understand more about other cultures and corners of the world beyond the school door. Every good teacher knows the impact and importance of education. It is not just about learning, reading, writing and arithmetic at school. Instead, **formal education is about gaining knowledge and the skills needed to become a better person and create a better society to live in .**

An ode to my ideal teacher

Abdul Samad
11 CB

As I sit down to express my gratitude and admiration for you, I find myself filled with a sense of profound appreciation for the impact you've had on my life. you are not just a teacher, you are the embodiment of dedication, compassion and wisdom. In the journey of education, you are the guiding light that illuminates the path to knowledge and self discovery.

As I reflect on the profound impact you have had on my life, I am filled with an overwhelming sense of gratitude. You have shaped my journey in ways, I cannot begin to express and for that, I am eternally greatful your guidance has not only enriched my mind but also touched my heart leaving an indelible mark that will stay with me always.

In conclusion, respected ideal teacher, I want to thank you from the bottom of my heart for your honest dedication, boundless compassion and endless wisdom. You are not just a teacher; you are a beacon of light in the lives of your students, illuminating the path to knowledge, enlightenment and self discovery. May your passion continue to inspire and your influence continue to shape the minds and hearts of generations to home with deepest gratitude and admiration

Don't Give Up

Sunakshi Rawat
11th CG

Long time ago, there lived a boy named Rodney in a village. He was very happy with his family. But his happiness could not lost for long. Rodney and his fellow villagers faced a severe drought. They desperately waited for rains but with no luck. All the crops, land and even trees dried up . The cattle started dying. As there was no rain, the stream was dying up slowly.

One night, during a meeting with the villagers, Rodney said ''Friends, we all have heard tales from our grandparents about on underground river flowing through our village. Why don't we dig and see?'' The villagers agreed and started digging. They dug for few days but gave up soon. However, Rodney kept on digging when people told him to give up, he said, ''God is helping and guiding my way.''

One day, when he had dug deep enough, Rodney saw water. His attitude of not giving up saved the whole village. ''Never give up 50 easily,'' Rodney advised all the villagers. Now, they have never short of water, and whenever any problem arises, all the villagers come up together and find a solution.

हाईस्कूल परीक्षा 2023 में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र एवं छात्राए

क्रं0सं0	नाम	क्रं0सं0	नाम	क्रं0सं0	नाम
	छात्रा वर्ग		**छात्रा वर्ग**		**छात्रा वर्ग**
01	वंशिका सिंह	17	वैशाली केसरवानी	33	भाव्या श्रीवास्तव
02	सारिका शर्मा	18	मान्या मिश्रा	34	हिफ्ज़ा आलमीन
03	कशिश शर्मा	19	रिया गौतम	35	आफरीन इकबाल
04	भूमि यादव	20	प्रिया गुप्ता	36	मानसी सिंह
05	श्रेजल कनौजिया	21	रिया सिंह		**छात्र वर्ग**
06	कोमल	22	उन्नति केसरवानी	01	फरहान बेला
07	शिफा फात्मा	23	तमन्ना कुरैशी	02	युवराज कनौजिया
08	कंचन यादव	24	यशस्वी माली	03	मोहित सैनी
09	अरीबा आलम	25	भावना साहू	04	आयुष शर्मा
10	माही केसरवानी	26	अनुष्का पाठक	05	शंशाक विश्वकर्मा
11	रीतिका यादव	27	मुस्कान गौर	06	मोहम्मद शाहिद कुरैशी
12	अंजली देवी	28	आफरीन	07	मोहम्मद कैफ
13	विशाखा गुप्ता	29	आस्था साहू	08	मोहम्मद अलमीद
14	परी केसरवानी	30	कीर्ति श्रीवास्तव	09	मोहम्मद आकिब
15	सुनाक्षी रावत	31	सानिया आरिफ	10	ऋषभ सक्सेना
16	यशी केसरवानी	32	अलीशा		

इण्टर परीक्षा 2023 में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र एवं छात्राए

क्रं0सं0	नाम	क्रं0सं0	नाम	क्रं0सं0	नाम
	छात्रा वर्ग		**छात्रा वर्ग**		**छात्रा वर्ग**
	विज्ञान वर्ग		**वाणिज्य वर्ग**		**कला वर्ग**
01	गौरी मालवीय	01	खुशी धुस्सा	01	मान्या सिंह
02	अनुष्का सिंह	02	नयन्तिका श्रीवास्तव	02	अशफिया खातून
03	रूपाली श्रीवास्तव	03	काजल तिवारी	03	नन्दनी
04	प्रिया वर्मा	04	आयशा ताहिर		
05	छवि जायसवाल	05	पायल पाखिरा		**छात्र वर्ग**
06	गायत्री प्रजापति	06	आकांक्षा हयारन		**विज्ञान वर्ग**
07	महक राव	07	जागृति गुप्ता	01	अक्षत साहू
08	आकांक्षा जैन	08	इशिका मिश्रा	02	पीयूष विश्वकर्मा
09	अलीबा	09	नेहा साहू	03	आकाश कुमार
10	सौम्या सोनकर	10	तनु साहू	04	अमन यादव
11	मेघना मिश्रा	11	मानसी सोनी		**वाणिज्य वर्ग**
		12	अलीशा गुप्ता	01	हर्षित शुक्ला
		13	ऋषिका कुमारी		
		14	आँचल साहू		

अग्रवाल जातीय शिक्षा परिषद, प्रयागराज

कार्यकारिणी समिति के सम्मानित पदाधिकारी एवं सदस्यगण

क्र.सं.	नाम	पदनाम
1.	डॉ0 पीयूष रंजन अग्रवाल	अध्यक्ष
2.	श्री शिव दर्शन लाल अग्रवाल	उपाध्यक्ष
3.	डॉ0 हरी ओम अग्रवाल	उपाध्यक्ष
4.	श्री गोपाल दास अग्रवाल	उपाध्यक्ष
5.	श्री राम कृष्ण अग्रवाल	उपाध्यक्ष
6.	श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल	उपाध्यक्ष
7.	श्री राजीव रंजन अग्रवाल	उपाध्यक्ष
8.	श्री राज कमल अग्रवाल	उपाध्यक्ष
9.	श्री राजेश अग्रवाल	मंत्री
10.	श्री विजय कृष्ण	कोषाध्यक्ष
11.	श्री श्याम मनोहर अग्रवाल	संयुक्त मंत्री
12.	श्री नरेश कुमार गुप्ता	संयुक्त मंत्री
13.	श्री आशुतोष अग्रवाल	संयुक्त मंत्री
14.	श्री सुनील अग्रवाल	संयुक्त मंत्री
15.	श्री विकास अग्रवाल	संयुक्त मंत्री
16.	श्री वीरेन्द्र कुमार गुप्त	सदस्य
17.	श्री ओम प्रकाश अग्रवाल	सदस्य
18.	डॉ0 स्मिता अग्रवाल	सदस्य
19.	श्री संजय गोयल	सदस्य
20.	श्री रोशन अग्रवाल	सदस्य
21.	श्री शिवांश अग्रवाल	सदस्य
22.	श्री राकेश अग्रवाल	सदस्य
23.	श्री पुष्कर अग्रवाल	सदस्य
24.	श्री अजय कुमार जैन	सदस्य
25.	श्री पुनीत अग्रवाल	सदस्य

इलाहाबाद इण्टर कालेज, प्रयागराज

प्रबन्ध समिति के सम्मानित पदाधिकारी एवं सदस्यगण

क्र.सं.	नाम	पदनाम
1.	श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल	अध्यक्ष
2.	श्री शिव दर्शन लाल अग्रवाल	उपाध्यक्ष
3.	प्रोफेसर (डॉ0) पीयूष रंजन अग्रवाल	मंत्री-प्रबन्धक
4.	श्री श्याम मनोहर अग्रवाल	संयुक्त मंत्री
5.	श्री विजय कृष्ण	कोषाध्यक्ष
6.	श्री राजेश अग्रवाल	सदस्य
7.	श्री सुनील अग्रवाल	सदस्य
8.	श्री रामकृष्ण अग्रवाल (चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट)	सदस्य
9.	डॉ0 (श्रीमती) मंजू सिंह	प्रधानाचार्य-पदेन
10.	श्री दिनेश पाण्डेय	अध्यापक प्रतिनिधि
11.	श्रीमती रूबी अग्रवाल	अध्यापक प्रतिनिधि

इलाहाबाद इण्टर कालेज, प्रयागराज

कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाएं

क्र.सं.	नाम	पदनाम
1.	डॉ0 (श्रीमती) मंजू सिंह	प्रधानाचार्य
2.	डॉ0 (श्रीमती) इन्दु सिंह	प्रवक्ता
3.	डॉ0 जय प्रकाश शर्मा	प्रवक्ता
4.	डॉ0 अनन्त कुमार गुप्त	प्रवक्ता
5.	श्री बलराम	प्रवक्ता
6.	श्री सुखराम	प्रवक्ता
7.	श्री महेश कुमार श्रीवास्तव	प्रवक्ता
8.	डॉ0 श्रीराम तिवारी	प्रवक्ता
9.	श्री श्याम शंकर	प्रवक्ता
10.	श्री राजेन्द्र प्रताप सिंह	प्रवक्ता
11.	श्रीमती मीनाक्षी शर्मा	प्रवक्ता
12.	श्री अजय बहादुर सिंह	प्रवक्ता
13.	श्री अनिल कुमार	प्रवक्ता
14.	डॉ0 (श्रीमती) सुनीता सिंह	प्रवक्ता
15.	डॉ0 देवी शरण	प्रवक्ता
16.	श्रीमती रश्मि अग्रवाल	प्रवक्ता
17.	श्रीमती मीनाक्षी अग्रवाल	सहायक अध्यापिका
18.	डॉ0 मुकेश त्रिपाठी	सहायक अध्यापक
19.	श्री चन्द्र प्रकाश	सहायक अध्यापक
20.	श्री राजीव कुमार सिंह	सहायक अध्यापक
21.	श्रीमती शालिनी कनौजिया	सहायक अध्यापिका
22.	श्री विनोद कुमार	सहायक अध्यापक
23.	श्रीमती कौशिकी अग्रहरि	सहायक अध्यापिका
24.	श्री कुँवर मृगेन्द्र सिंह	सहायक अध्यापक
25.	श्री चन्द्र प्रकाश	सहायक अध्यापक
26.	श्री महेश्वरी प्रसाद संत	सहायक अध्यापक
27.	श्री दिनेश पाण्डेय	सहायक अध्यापक
28.	श्रीमती रूबी अग्रवाल	सहायक अध्यापिका
29.	श्रीमती शालिनी मिश्रा	सहायक अध्यापिकापका
30.	श्री अमर कुमार	सहायक अध्यापक

कार्यालय विभाग - लिपिक वर्ग

क्र.सं.	नाम	पदनाम
1.	श्री अनिल कुमार त्रिपाठी	प्रधान लिपिक
2.	श्री पारसनाथ	सहायक लिपिक
3.	श्री अभिषेक चन्द्रा	सहायक लिपिक
4.	श्री सुशील कुमार सिंह	सहायक लिपिक

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

1.	श्री गोपाल जी गौड़	परिचारक
2.	श्री राजकुमार	परिचारक
3.	श्री अनुज मिश्रा	परिचारक
4.	श्री सुरेश राम	परिचारक
5.	श्री अभय सिंह	परिचारक
6.	श्री सुरेन्द्र कुमार	परिचारक
7.	श्री सचिन कुमार धुरिया	परिचारक
8.	श्री धीरेन्द्र कुमार मिश्रा	परिचारक
9.	श्री अजय कुमार कुशवाहा	परिचारक
10.	श्री मन्नी लाल चौधरी	परिचारक
11.	श्री काली प्रसाद कुशवाहा	परिचारक
12.	श्रीमती अनीता	सफाई कर्मचारी

इलाहाबाद इण्टर कालेज, प्रयागराज

प्रबन्ध समिति के सम्मानित पदाधिकारियों एवं सदस्यों के साथ विद्यालय में कार्यरत प्रधानाचार्य, लिपिक वर्ग एवं चुतर्थश्रेणी कर्मचारीगण

प्रतियोगिता में छात्राओं द्वारा बनाई गई रंगोली

छात्र – छात्राओं द्वारा डॉ0 जय प्रकाश शर्मा क्रीड़ाध्यक्ष के मार्ग दर्शन में पी0टी0 का अभ्यास करते हुए

विद्यालय की सहायक अध्यापिका श्रीमती शालिनी कनौजिया के मार्ग दर्शन में कला वर्ग की छात्राओं द्वारा बनाई गई पेंटिंग

श्रीमती मीनाक्षी शर्मा
(प्रवक्ता, भौ०वि०)
के मार्गदर्शन में प्रयोगात्मक
कार्य करती हुई छात्राएं

रसायन विज्ञान
की प्रयोगात्मक कार्य करती
हुई छात्राएं

विद्यालय के स्काउट - दल
साथ में शिक्षक एवं शिक्षिकाएं

कैंप में विद्यालय के स्काउट

वार्षिक खेलकूद में
प्रतिभाग करते छात्र